वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका

वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका

(आधुनिक मैथिली व्याकरण)

भाग- 1

पं. बाल गोविन्द 'आर्य'

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

ISBN : 978-93-88811-49-1
दाम : 250/- (भा.रू)

पहिल संस्करण : 2020
सर्वाधिकार © पं. बाल गोविन्द 'आर्य' उर्फ गोविन्द यादव
ग्राम : जहलीपट्टी, पोस्ट : परसा, भाया+प्रखण्ड : घोघरडिहा, जिला : मधुबनी (बिहार), पिन : 847402, सम्पर्क : 7759981435

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 9931654742, 6200635563

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण सज्जा : सुश्री पल्लवी मण्डल

VARNA PRAKARAN BHASHYA-BHUMIKA :
A Maithili Grammer by Pandit Bal Govind 'Arya'

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट © धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

।। श्री गुरवे नमः।।

मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः

श्लोक-

भवानी शंकरौ वन्दे श्रधा विश्वास रूपिणौ।

याम्याम् विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः

स्थमीश्वरम्।।

भावार्थ- श्रधा स्वरूप (स्व. श्री माताजी) आ विश्वास स्वरूप (ब्रह्मलीन श्री पिताजी) श्री पार्वती आ शंकरजीक हम वन्दना करै छी; हुनका बिनु सिद्धजन अपना अन्तःकरणमे स्थित ईश्वरकेँ नहि देख सकैत अछि।

अस्तु, माता-पिता आ पूज्यपाद ब्रह्मलीन सद्गुरुक चरण-कमलमे सादर समर्पित।

अवैयाकरण स्त्वन्ध मूकः कोशविवर्जितः।

साहित्य रहितः पंगु वधिरस्तर्क विवर्जितः।।

व्याकरण ज्ञान बिनु आन्हर, शब्द कोषक बिनु बौक, साहित्यक बिना अपंग तथा तर्कक बिना कियो बहिर होइत अछि।

साभार ग्रन्थ-

ऐ पोथीक परिभाषा आ उदाहरण व्याकरणक जनक 'महर्षि पाणिनि'क 'अष्टाध्यायी' आ 'महर्षि पतञ्जलि'क महाभाष्य तथा विद्ववर 'वरदराज'क 'लघु सिद्धान्त कौमुदि' सँ उद्धृत अछि। ओना, मैथिली जगतक वर्तमान वरेण्य साहित्यकार; हमर अभिभावक श्री जगदीश प्रसाद मण्डलसँ प्राप्त 'श्री दीनवन्धु झा'क व्याकरणक स्वाध्यायक समन्वय करि ई पोथी प्रस्तुत अछि। संगे, जहियासँ मैथिली-मिथिलाक सर्वहारा कथा-साहित्य गोष्ठी–'सगर राति दीप जरय'मे भाग लेबए लगलौं आ अनेको कथा श्रवण करैक अवसर पेलौं तहू सभसँ प्राप्त शब्द आ शब्दक उच्चारणक स्वभाविक समावेश यथोचित कहले जाएत। अपन सतत कोशिश अछिए जे बदलल समय, बदलल शब्द-उच्चारणक शत्-प्रतिशत समावेश आवश्यक...। अतः अपन अध्ययण, स्वाध्याय आ अध्यापनक क्रममे अनेकानेक पोथीकेँ पढ़बाक-गुणवाक जे अवसर भेटल, ओकरे परिणाम ई लघु पोथी 'वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका' अपनेक हाथमे अछि।

ध्यातव्य ई जे अखन धरि हिन्दी भाषा वा मैथिली भाषा-के अपन शब्दावलिक आधारपर व्याकरण नहि अछि। अखनो समस्त भारत आ विश्वमे संस्कृत व्याकरण आ संस्कृत शब्द-कोषक आधार मानि अध्ययण अध्यापन प्रामाणिकताक संग करौल जा रहल अछि। तँए एक बेर पुनः सभ पूर्वाचार्य आ ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता-संस्कृति एवम् तेसर नेत्र प्रदान केनिहार 'महर्षि पाणिनि', महर्षि पतञ्जलि' आ 'महर्षि कात्यायण'क चरण-कमलमे शत-शत नमन। ऐ 'त्रिमुनि'केँ

माता-पिता आ गुरु सदृश्य कोटि-कोटि नमन। बुद्धिक देवता भगवान गणेश आ विद्याक अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वतीकेँ वारम्वार प्रणाम्।

।। मंगल श्लोक ।।

"वर्णानामर्थसंधानाम् रसानामछन्दसामपि।

मंगलानाम् च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायको।"

-श्री मद् रामचरित मानस।

-श्री मद् गोस्वामी तुलसीदास।

भावार्थ-

वर्णक मेलसँ बनल अक्षर आ ओइसँ निर्मित शब्द समूह एवम् शब्द समूहमे छन्दसँ प्राप्त रस (आनन्द) तथा सभ प्रकारसँ कल्याण करैबला (माता-पिता-गुरु) तथा सरस्वतीजी आ भगवान गणेश (पञ्च देवता) केँ हम वन्दना करइ छी।

वन्दे वोधमयं नित्य गुरुं शंकर रूपिणम्।

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्दते।

ज्ञानमय, नित्य शंकर रूपी गुरुकेँ हम वन्दना करै छी, जिनकर आश्रय पाबि टेंढ़ चन्द्रमा सर्वत्र वन्दित अछि।

हरि ओ३म् तत्सत्।

दू शब्द

विगत तीस वर्षसँ अध्ययण-अध्यापनक क्षेत्रसँ सम्वद्ध छी। ई समय सिर्फ निर्मली (सुपौल)मे बीतल अछि। ऐसँ पहिने मधुबनी, दरभंगा आदि स्थानक संग अपन गाममे रहलौं। अध्यापनक क्रममे देखलौं जे; जे कोनो छात्र-छात्रा 10मी आ 12मीमे संस्कृत, हिन्दी वा मैथिली पढ़ैले अबै छैथ तँ ओ व्याकरणक आधार-ज्ञान अर्थात् 'वर्ण-प्रकरण'क विषयमे सर्वथा अनभिज्ञ रहै छैथ। ओ वर्ण आ अक्षरमे अन्तर नहि जनै छैथ। मात्र दससँ बारह प्रतिशत छात्रकेँ अन्तर बुझल रहै छैन। वर्तमान समयमे जे आबि रहल अछि; ओइमे एकर प्रतिशत आरो घटि गेल अछि। ऐ बातकेँ ध्यान राखि आ शिक्षक वन्धु तथा छात्र लोकनिक आग्रहपर वर्ण-प्रकरण आ आनो अध्यायक विषय-वस्तुकेँ लिखबाक लेल तत्पर भेलौं। परञ्च, सभ अध्यायक लेखन कार्य अखन सम्भव नहि भऽ सकल आ 'वर्ण प्रकरण', 'अक्षर प्रकरण', 'वर्ण विश्लेशण', 'वर्ण संयोजन' अथवा 'ध्वनि-मेल' आ 'सन्धि प्रकरण'क ई लघु पोथी परिभाषा आ उदाहरण सहित, साथमे सन्धि कोश लिखि अहाँ सबहक बीच प्रस्तुत अछि।

लगिचाएल परीक्षाकेँ ध्यानमे रखैत परीक्षार्थी लेल किछु हड़बड़ी-धड़फड़ीमे लिखल ऐ पोथीमे गलती वा त्रुटि हएब स्वभाविक अछि। तँए पाठक लोकैनसँ आग्रह जे यदि कोनो गलती देखबामे आबए तँ हमरा वा प्रकाशक महोदयकेँ अवगत कराएब। ऐ कार्यक लेल हम अहाँक आभारी रहब। पुन: त्रुटिक सुधार कए ऐगला संस्करण छापल जाएत।

ऐ लघु पोथीमे ‘वर्ण विश्लेषण’क संग शुद्ध-शुद्ध अंग्रेजी लिखबाक नियम लघु रूपमे सेहो देल गेल अछि। विश्वास अछि जे बिहार बोर्डक छात्र-छात्राकेँ ऐ पोथीसँ अपेक्षित लाभ हेतैन।

ऐ पोथीकेँ लिखए लेल आग्रह केनिहार छात्र-छात्रा आ शिक्षक लोकैनकेँ हृदयसँ धन्यवाद दैत बेर-बेर प्रेरित केनिहार श्री उमेश मण्डलजी केँ कोटिश: साधुवाद..! संगहि-संग ओइ स्थान आ उपस्थिति विद्वरवर लोकैनकेँ बारम्बार नमन..! ओइ भूमिकेँ बेर-बेर दण्डवत् आ साष्टाङ्ग प्रणाम्..! ओ भूमि थिक मधुबनी जिलाक मेंहथ गामक श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक दरबज्जा। जैठाम सर्वहारा कथा-साहित्य मंच ‘सगर राति दीप जरय’क 82म् गोष्ठीक आयोजन भेल छल। ओहीठाम ऐ पोथी लेल संकल्पित भेल रही जे अपनो मैथिलीक एकटा व्याकरण हुअए। अत: हमरा नजैरमे श्री गजेन्द्र ठाकुरजी आ हुनक दरबज्जा आ संगहि हुनक उदात् भावनाक उद्गारकेँ बेर-बेर नमन आ परिणाम स्वरूप ई पोथी...।

आशा अछि, ‘कथा बौध सिद्ध मेहथपा’ संयोजनमे संकल्पक परिणाम ई पोथी छात्र-छात्राक लेल सेहो उपयोगी सिद्ध होएत। ❑

श्री व्याकरणाचार्य

पं. बाल गोविन्द ‘आर्य’

जहलीपट्टी

विवाह पञ्चमी, 2019 ई.

अनुक्रम

अध्याय : 1/13
वर्ण प्रकरण/18
अक्षर प्रकरण/22
समान्य प्रकरण/26
वर्ण विश्लेषण (विस्तार)/38
वर्ण संयोजन या ध्वनि-मेल/39
शुद्ध-शुद्ध अंग्रेजी लिखैक नियम/40
वर्णक उच्चारण स्थान/44
शेष परिभाषा प्रकरण/47
अध्याय : 2/52
सन्धि प्रकरण/54
1. स्वर सन्धि/56
(क) दीर्घ सन्धि/57
(ख) गुण सन्धि/66
(ग) वृद्धि सन्धि/73
(घ) यण सन्धि/81
(ङ) अयादि सन्धि/89
(च) पूर्वरूप सन्धि/93
(2.) व्यञ्जन सन्धि/97

(3.) विसर्ग सन्धि/112
* सन्धि कोष/124
* मिथिलाक्षर सीखू/129

अध्याय : 1

व्याकरण शास्त्र

प्रश्न : व्याकरण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : जइ शास्त्रक द्वारा शुद्ध-शुद्ध लिखल-पढ़ल आ बजैक कला अबैत अछि; ओकरा व्याकरण कहल जाइत अछि।

अथवा-

जइ शास्त्रक द्वारा शुद्ध-शुद्ध लिखब-पढ़ब आ बजबाक कला आदि गुणक विकास होइत अछि, ओकरा व्याकरण कहल जाइत अछि।

प्रश्न : व्याकरणक मुख्य कतेक भाग मानल जाइत अछि?

उत्तर : व्याकरणक मुख्य पाँच भाग मानल जाइत अछि; जे निम्नलिखित अछि-

1. वर्ण विचार (Orthography)
2. शब्द विचार (Etymology)
3. वाक्य विचार (Syntex)
4. चिह्न विचार (Punctuation)
5. छन्द विचार (Prosody)

* वक्तव्य- प्राय: वर्ग 10म् वा 12म् वर्गक (श्रेणीक) छात्र/छात्रा लोकैनकेँ लिखै-पढ़ै आ बजैक कला आबि जाइत अछि, परञ्च सावधानी पूर्वक लिखब आ पढ़ब तथा बाजबमे गलती कऽ दइ छैथ। कारण ओ विचारि कऽ नहि लिखै-पढ़ै आ बजै छैथ। छोट-छोट गलतीक कारणें हुनकर लिखब अशुद्ध आ अपूर्ण भऽ जाइ छैन।

परिणाम स्वरूप ओ परीक्षामे अपेक्षित अंकक प्राप्ति नइ करि पबै छैथ। केतेक छात्र तँ असफल सेहो भऽ जाइ छैथ।

तही लेल ऐठाम सभसँ पहिने व्याकरणक चारिम भाग अर्थात् 'चिह्न-विचार'पर छात्र-छात्राक ध्यानाकृष्ट करैक प्रयास कएल जा रहल अछि।

* व्याकरणक जइ भागमे चिह्नपर विचार कएल जाइत अछि; ओकरा चिह्न विचार कहल जाइत अछि।

(1.) यदि वाणीपर चतुर्थांश (1/4 भाग) क्षणक लेल विराम देबाक अछि, तखन अल्प विराम (, - Comma) के प्रयोग करबाक चाही। ओना, ई प्रत्येक शब्दक आगाँ सेहो प्रयोग कएल जाइत अछि। **जेना-**

(a) अल्लु, परोर, कोबी, भट्टा, टमाटर, धनियाँ...।

(b) किन्तु, परन्तु, पर, मुदा, लेकीन इत्यादि शब्दक बाद अल्प विरामक प्रयोग होइत अछि।

(2.) यदि वाणीपर अदहा (1/2 भाग) क्षणक लेल विराम देबाक आवश्यकता पड़ैत अछि, तखन अर्ध विराम चिह्नक (; Semi colon) प्रयोग कएल जाइत अछि। उदाहरण-

ई काज तँ भऽ गेल; आब आगाँक काज देखियौ।

* अर्ध विरामक प्रयोग प्राय: वाक्य-के अपूर्ण रहलापर सहायक क्रियाक बाद होइत अछि।

ऐ प्रकारे आनो-आन चिह्नकेँ संक्षेपमे दर्शौल जा रहल अछि।

3. । -पूर्ण विराम (Full Stop)

4. ! –विस्मयादि वोधक आ सम्बोधनमे

(Sin of interjection and Sin of Exclamation)

* एकर प्रयोग- आश्चर्य, विस्मय शोक या दु:ख, प्रसन्नता या

शावाशी, खुशी अथवा हृदयक उद्वेग, चिन्ता, आवेग वा जोश आदिमे कएल जाइत अछि।

* ! एकर प्रयोग किनको सम्बोधन करबामे अथवा पुकारब-चिल्लाएबमे होइत अछि।

5. ? –प्रश्नवाचक (Sin of interrogation)

* कोनो तरहक प्रश्न करैमे...।

6. – योजक (Sin of Conjuction)

* एकर प्रयोग दू शब्दकेँ जोड़ैमे आ विपरीत लिंगमे तथा द्वन्द्व समास एवम् सहचर शब्दमे कएल जाइत अछि। **जेना-**

माता-पिता, भाए-बहिन, पुरब-पच्छिम, आगाँ-पाछाँ, दिन-राति खेल-कुद इत्यादि...।

7. : विराम (Colon)

या अपूर्ण विराम

* एकर प्रयोग गणितक प्रश्नकेँ हल करबामे होइत अछि।

जेना- हल :

Solv :

(8) :- विराम आ योजक या विवरण चिह्न

(Colon and Dash) :-

* एकर प्रयोग प्रश्न या उत्तर लिखैक क्रममे होइत अछि।

जेना-

प्रश्न :-

उत्तर :-

(9) (क.) – निर्देशक (Dash) या रेखिका

(ख.) – योजक या विभाजक (Hiphen)

10. (0) संक्षेप सूचक या लाधव चिह्न (Contraction)

संवत् सं. , डा0 (डा.) , पं0 (पं.), ई0 (ई. ईस्वी) इत्यादि... ।

11. (‘ ’) उद्धरण चिह्न (inverted Comma)

* उपनाम, कवि, लेखक, समाचार पत्र, उपाधि आदिमे प्रयोग कएल जाइत अछि।

12. (“ ”) कथन युक्त वाक्य वा सम्पूर्ण वाक्यक लेल कएल जाइत अछि।

13. ({ ( ) }) कोष्ठक (Bracket), छोटी कोष्ठ, मध्यम कोष्ठ, बड़ी कोष्ठ।

14. (/) हँसपाद र, जेना क्रमांक, प्रयोग

15. (^) काकपाद र, **जेना-** राष्ट्र, षड्रिपु।

16. (*) तारा चिह्न (Star)

* एकर प्रयोग पाद टिप्पणीमे होइत अछि।

* व्याकरण शास्त्रक अन्दर आरो बहुत चिह्नक प्रयोग होइत अछि; जे छन्द शास्त्रक विषय थिक।

❑

वर्ण विचार

* वर्ण विचार :- व्याकरणक जइ भागमे वर्णपर विचार कएल जाइत अछि; ओकरा वर्ण विचार कहल जाइत अछि।

* एकरा अन्तर्गत वर्णक आकार, प्रकार, भेद, उच्चारण आ ओकरा मेलसँ अक्षर वा शब्द निर्माणक नियम देल जाइत अछि।

* व्याकरणमे बतौल गेल अछि जे-

1. वर्ण+वर्ण = अक्षर।
2. अक्षर+अक्षर = शब्द।
3. शब्दक समूह आ विराम चिह्नसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि।
4. छात्र बन्धुसँ अपेक्षा जे पहिने एक-एक वर्ण आ अक्षरक सम्बन्धमे पूर्ण जानकारी प्राप्त कऽ ली। अस्तु।

❑

वर्ण प्रकरण

* वर्ण :- भाषाक सभसँ छोट इकाइकेँ वर्ण कहल जाइत अछि।

अथवा

* जेकर खण्ड वा टुकड़ा नइ भऽ सकैत अछि; ओकरा वर्ण कहल जाइत अछि।

वर्ण

1. स्वर वर्ण
2. व्यंजन वर्ण

(1) स्वर वर्ण :- अ इ उ ऋ लृ – 5

(2) व्यंजन वर्ण :- (क) वर्गीय व्यंजन वर्ण

(ख) अवर्गीय व्यंजन वर्ण

(ग) संयुक्त व्यंजन वर्ण

नोट- वर्गीय व्यंजन वर्ण पच्चीस (25) आ अवर्गीय व्यंजन आठ (8) गोट होइत अछि; जेकरा मूल व्यंजन वर्ण कहल जाइत अछि। तीन गोट संयुक्त व्यंजन वर्ण सेहो होइत अछि।

अर्थात् मूल व्यंजन = 33

आ संयुक्त व्यंजन = 03

कुल 36

(क) वर्गीय व्येजन मै. हि. सं.

1. क् ख् ग् घ् ङ् – कु – कवर्ग – ककार

K Kh g gh ng

2. च् छ् ज् झ् ञ् – चु – चवर्ग – चकार

ch chh j jh yn

3. ट् ठ् ड् ढ् ण् – टु – टवर्ग – टकार

th th d dh n

4. त् थ् द् ध् न् – तु – तवर्ग – तकार

th th d dh n

5. प् फ् ब् भ् म्- पु- पवर्ग – पकार

p ph b bh m

* वर्गीय व्यंजन कुल 5x5 = 25 गोट अछि; जेकरा स्पर्श व्यंजन वर्ण कहल जाइत अछि।

(ख) अवर्गीय व्यंजन

(क) अन्त:स्थ वर्ण

(ख) ऊष्म वर्ण

(क) य् र् ल् व् - अन्त:स्थ वर्ण

y r l v (w)

* 'य् र् ल् व्' के अन्त:स्थ व्यंजन वर्ण कहल जाइत अछि।

अथवा-

जइ वर्णक उच्चारण मुँहक हवासँ होइत अछि; ओ अन्त:स्थ वर्ण कहल जाइत अछि।

अथवा-

मुँहक भीतर अवस्थित वायुसँ जइ वर्णक उच्चारण होइत अछि; ओकरा 'अन्त:स्थ वर्ण' कहल जाइत अछि।

अर्ध स्वर वर्ण – अन्त:स्थ वर्णकेँ अर्धस्वर वर्ण कहल जाइत अछि।

(ख) श् ष् स् ह्

sh. sh. S. h.

प्रश्न : ऊष्म वर्ण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : 'श् ष् स् तथा ह्' के ऊष्म वर्ण कहल जाइत अछि।

ध्यातव्य-

जइ वर्णक उच्चारणमे गर्म वायुक निष्कासन होइत अछि; ओकरा ऊष्म वर्ण कहल जाइत अछि।

* 'ऊष्म वर्ण'क उच्चारणमे पेटक भीतर पक्काशय वा जठराग्निक समीपसँ हवा बाहर अबैत अछि; जइ कारणें ओ गर्म होइत अछि।

हाथक हथेली मुँहक आगाँ राखि उच्चारण कए, जाँच कएल जाए- हवा गर्म होएत।

(ग) संयुक्त व्यंजन वर्ण-

क्ष् त्र् ज्ञ्

ksh tr jyn

प्रश्न : संयुक्त वर्ण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : ‘क्ष् त्र् ज्ञ्’ के संयुक्त वर्ण कहल जाइत अछि।

अथवा-

एकसँ अधिक वर्णक मेलसँ बनल वर्णकेँ संयुक्त वर्ण कहल जाइत अछि।

निष्कर्ष : व्यंजन वर्ण ओ वर्ण छी जे बिना स्वरक सहायताके बजले नै जा सकैए। अर्थात् व्यंजन वर्णक उच्चारणमे स्वरक सहायता परम आवश्यक अछि। **जेना-**

(क) क् अनुच्चरित – तथा शब्दक संग

(ख) वाक्य- उच्चरित। - उच्चारित

वर्ण प्रकारण समाप्त

❑

अक्षर प्रकरण

अक्षर = अ + क्षर (नाश)

जेकर क्षय या नाश नहि होइत अछि; ओकरा अक्षर कहल जाइत अछि।

अथवा-

जेकर खण्ड वा टुकड़ा कएल जा सकैत अछि; ओकरा 'अक्षर' कहल जाइत अछि। **जेना-**

(1.) स्वराक्षर : (क) आ ई ऊ ॠ ऌ = 5

(ख) ए ऐ ओ औ अं अः = 6

कुल 11

(2.) व्यंजनाक्षर : वर्गीय

(क) क ख ग घ ङ – कवर्ग

ka. kha. ga. gha. nga.

(ख) च छ ज झ ञ – चवर्ग

Cha chha ja jha yna

(ग) ट ठ ड ढ़ ण – टवर्ग

ta tha da dha na

(घ) त थ द ध न – तवर्ग

ta tha da dha na

(ङ) प फ ब भ म

pa pha ba bha ma

* ऐ पच्चीसो अक्षरक खण्ड होइत अछि।

जेना- क = क्+अ, ख=ख्+अ...

च = च्+अ, छ=छ्+अ, ट=ट्+अ...

त = त्+अ.., प=प्+अ...

* परन्तु, ध्यातव्य अछि जे वर्णक खण्ड नहि होइत अछि। **जेना-** क्=...+... x

ख्=...+... x, प्=...+... x

* 'वर्ण'क उच्चारण सेहो (अकेले रहलापर) असम्भव अछि। स्वरसँ जुड़लापर उच्चारण कएल जा सकैत अछि। **जेना-** क्+अ = क.., प्+अ= प आदि।

प्रश्न : स्पर्शाक्षर केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : 'क' सँ लऽ कऽ 'म' तकक पच्चीस अक्षरकेँ स्पर्शाक्षर कहल जाइत अछि।

(3.) (A) अवर्गीय व्यंजनाक्षर

य र ल व – अन्त:स्थ अक्षर

ya ra la va (wa)

प्रश्न : अन्त:स्थाक्षर केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : 'य', 'र', 'ल' तथा 'व' के अन्त:स्थाक्षर कहल जाइत अछि।

अथवा- मुँहक अन्दर अवस्थित वायुसँ जइ अक्षरक उच्चारण

होइत अछि, ओकरा अन्त:स्थाक्षर कहल जाइत अछि।

प्रश्न : अर्धस्वराक्षर केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : अन्त:स्थाक्षरकेँ अर्धस्वराक्षर कहल जाइत अछि।

* ध्यातव्य : अर्ध स्वराक्षर कहैक भाव ई अछि जे 'य', 'र', 'ल' तथा 'व' दूटा स्वरक आधा-आधा मात्रासँ बनल अछि।

जेना देखू- 'य' कोन दू वर्णक मेलसँ बनल अछि?

उत्तर : 'य' इ+अ के मेलसँ बनल अछि।

प्रश्न : इ+अ..?

हल : इ+अ

↓

य्+अ = य (:· इ=य्)

ई सभ प्रश्नक आगाँक विषय अछि।

(B) श ष स ह – ऊष्माक्षर

sh sha sa ha

* श (Sh) मऽ (h) स्वरक (अ) पूर्ति कऽ रहल अछि।

प्रश्न : ऊष्माक्षर केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : 'श', 'ष', 'स' आ 'ह' के ऊष्माक्षर कहल जाइत अछि।

अथवा- जइ अक्षरक उच्चारणमे गर्म वायुक निष्कासन होइत अछि, ओकरा ऊष्माक्षर कहल जाइत अछि।

नोट- वर्ण प्रकरणमे बतौल गेल अछि जे पक्काशयक समीपसँ वायु एबाक कारणेँ गर्म (उष्म) रहैत अछि; यएह कारण अछि जे

एकरा ऊष्माक्षर कहल जाइत अछि।

(C) क्ष त्र ज्ञ – संयुक्ताक्षर

ksha tra jyna

प्रश्न : संयुक्ताक्षर केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : 'क्ष', 'त्र' आ 'ज्ञ' के संयुक्ताक्षर कहल जाइत अछि।

अथवा-

एकसँ अधिक वर्ण वा अक्षरक मेलसँ बनल वर्णकेँ संयुक्ताक्षर कहल जाइत अछि।

प्रश्न : 'क्ष' कोन-कोन वर्णक मेलसँ बनल अछि?

उत्तर : (1.) क्ष = ksha

क्+ष

अर्थात् 'क्ष' क्+ष मिल कऽ बनल अछि।

ऐ तरहेँ-

(2.) त्र = t+ra

त्+र

अर्थात् 'त्' + 'र' के मेलसँ 'त्र' बनैत अछि।

(3.) 'ज्ञ' = J+yna

ज्+ञ

अर्थात् 'ज्+ञ' के मेलसँ 'ज्ञ' बनैत अछि।

❑

सामान्य प्रकरण-

अक्षर- एकर खण्ड होइत अछि।

↓

वर्ण- एकर खण्ड नइ होइत अछि।

↓

भेद : (क) स्वर वर्ण (Vowel)

(ख) व्यंजन वर्ण (Consonent)

(ग) अर्ध स्वर वर्ण (Semi vowel)

1. स्वर वर्ण : जे स्वत: स्फूर्त होइत अछि वा जेकर उच्चारण स्वतन्त्रतापूर्वक अपने-आप होइत अछि अथवा जेकरा उच्चारणमे अन्य वर्णक सहायता नहि लेल जाइत अछि; ओकरा स्वर वर्ण कहल जाइत अछि। **जेना-**

संस्कृतमे-

(क) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ ॡ – 10
a, aa, i, ee, u, oo, ri, ree, lri, lree

(ख) ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ:

e, ai, o, au, an, ah – 6

10+6 = 16 (कुल)

हिन्दीमे-

(क) अ आ इ ई उ ऊ ऋ - 7

(ख) ऐ ऐ ओ औ - 4

कुल 11

मैथिलीमे-

(क) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ – 09
ए, ऐ, ओ, औ - 04
कुल- 13

स्वर वर्णक भेद-

1. ह्रस्व स्वर (2) दीर्घ स्वर (3) प्लुत स्वर

* मात्रा- 'अ' बजैमे जतेक समय लगैत अछि, ओकरा एक मात्रा कहल जाइत अछि।

(१) **ह्रस्व स्वर :** जइ स्वरक उच्चारणमे एक मात्राक समय लगैत अछि; ओकरा 'ह्रस्व स्वर' कहल जाइत अछि।

अथवा-

जइ स्वरमे एक मात्रा होइत अछि; ओ ह्रस्व स्वर भेल।

जेना- (क) अ इ उ ऋ ऌ

नोट- एकरा मूल स्वर वा बीज वर्ण अथवा बीजाक्षर सेहो कहल जाइत अछि। ऐठाम आबि कऽ वर्ण आ अक्षरक भेद समाप्त भऽ जाइत अछि। अही कारणेँ वर्णकेँ अक्षर आ अक्षरकेँ वर्ण कहल जाइत अछि। बीजाक्षर कहैक अभिप्राय ई जे जहिना कोनो बीजकेँ खण्डित केलाक बाद ओकर ऊर्बरा शक्ति नष्ट भऽ जाइत अछि, तहिना यदि ऐ पाँचो 'ह्रस्व स्वर'केँ खण्ड वा टुकड़ा कएल जाएत; तखन एकर स्तित्व समाप्त भऽ जाएत। भाव ई कि एकर खण्ड वा टुकड़ा सम्भव नइ अछि।

एकर खण्ड तँ नइ होइत अछि; परन्तु एकरा रूपमे परिवर्त्तन

अबस्स होइत अछि; जे द्रष्टव्य अछि।

* ह्रस्व स्वरक रूपमे परिवर्त्तन-

(1) अ = ऽ (अर्द्ध 'अ', खण्डाकार, पूर्व रूप या अवग्रह चिह्न)

आकार : अंग्रेजीक अक्षर 'एस'क समान।

उच्चारण : अर्द्ध 'अ'क समान। अर्थात् उच्चारणक क्रममे अ = ऽ एवम् आ = ऽऽ आ संगीत शास्त्रक आलापमे 'आ... आ... आ...।'मे आ..ऽ.- ऽ- ऽ..। आ- ऽ- ऽ। समैयक अनुसार।

2. इ = य्।
3. उ = व्।
4. ऋ = र्।
5. लृ = ल्।

* सन्धिमे जखन इ = य्; तखन ई = य्

ऐ प्रकारेँ उ = व् तँ ऊ = व् तथा ऋ = र् तँ ॠ = र् आ लृ = ल् तँ ॡ = ल् होइत अछि।

1. दीर्घ स्वर : जइ स्वरकेँ बजैमे ह्रस्व स्वरसँ दूना समय लगैत अछि; ओकरा दीर्घ स्वर कहल जाइत अछि।

अथवा-

जइ स्वरमे दू मात्रा होइत अछि; ओकरा दीर्घ स्वर कहल जाइत अछि। **जेना-**

(क) आ ई ऊ ॠ ॡ = 5

(ख) ऐ ऐ ओ औ अं अः = 6

कुल 11 (एगारह)

आब प्रश्न अछि जे उपर्युक्त सभ केना दीर्घ स्वर छी। एकरा

प्रश्न आ उत्तरक माध्यमसँ जानैक प्रयास करी..।

1. प्रश्न : आ = ... + ... ?

उत्तर : a. अ+अ = आ- (ा) – ह्रस्व+ह्रस्व= दीर्घ

b. अ+आ = आ- (ा) – ह्रस्व+दीर्घ = ,,

c. आ+अ = आ- (ा) – दीर्घ+ह्रस्व = ,,

d. आ+आ = आ- (ा) – दीर्घ+दीर्घ= ,,

भाव ई जे फलाफली हमेशा दीर्घ होइत अछि। ऐ प्रकारेँ-

2. प्रश्न : ई= ... +... ?

उत्तर : a. इ + इ = ई - (ी)

b. इ + ई = ,, - (,,)

c. ई + इ = ,, - (,,)

d. ई + ई = ,, - (,,)

3. प्रश्न : ऊ = ... + ... ?

उत्तर : a. उ + उ = ऊ - (ू)

b. उ + ऊ = ,, - (,,)

c. ऊ + उ = ,, - (,,)

d. ऊ + ऊ = ,, - (,,)

4. प्रश्न : ऋ =...+..?

उत्तर : a. ऋ + ऋ = ऋ (ृ) (ह्रस्व+ह्रस्व= दीर्घ)

b. ऋ + ॠ = ,, -(ृ) (ह्रस्व+दीर्घ= दीर्घ)

c. ॠ + ऋ = ,, - (,,) (दीर्घ+ह्रस्व= दीर्घ)

d. ॠ + ॠ = ,, - (,,) (दीर्घ+दीर्घ= दीर्घ)

ध्यातव्य अछि जे b. c. आ d. पाठ्यक्रमसँ बाहर अछि। एकर उदाहरण सभ, वेदमे पौल जाइत अछि।

5. प्रश्न : ऌ = ... + ... ?

उत्तर : a. ऌ + ऌ = ऌ – x

* b. c आ d पाठ्यक्रमसँ बाहर अछि तथा 'ऌ' आ 'ऌ'क मात्रा विकार नइ होइत अछि। भाषाक सोलह (16) स्वरमे तीन स्वरक अ, ऌ आ ऌ के मात्रा विकार नहि होइत अछि। कुल तेरह (13) स्वरक मात्रा विकार होइत अछि। ई आगाँ दर्शौल जाएत।

6. प्रश्न : ए = ... + ... ?

उत्तर : a. अ + इ = ए - (े)

b. आ + इ = ,, - (,,)

c. अ + ई = ,, - (,,)

d. आ + ई = ,, - (,,)

7. प्रश्न : ऐ = ... + ... ?

उत्तर : a. अ + ए = ऐ - (ै)

b. आ + ए = ,, - (,,)

c. अ + ऐ = ,, - (,,)

d. आ + ऐ = ,, - (,,)

8. प्रश्न : ओ = ... + ... ?

उत्तर : a. अ + उ = ओ - (ो)

b. आ + उ = ,, - (,,)

c. अ + ऊ = ,, - (,,)

d. आ + ऊ = ,, - (,,)

9. प्रश्न : औ = ... + ... ?

उत्तर : a. अ + ओ = औ - (ौ)

b. आ + ओ = ,, - (,,)

c. अ + औ = ,, - (,,)

d. आ + औ = ,, - (,,)

10. प्रश्न : अं = ... + ... ?

उत्तर : (अ+पञ्चम वर्ण = अं) **जेना-**

a. अ + ङ् = अं - (ं)

b. अ + ञ् = ,, - (,,)

c. अ + ण् = ,, - (,,)

d. अ + न् = ,, - (,,)

e. अ + म् = ,, - (,,)

उपर्युक्त उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे प्रत्येक वर्गक पञ्चम वर्ण, अनुस्वारक बराबर होइत अछि। यदि अनुस्वारक बदलामे पञ्चम वर्णक प्रयोग होइत अछि तखन ओ अपना वर्गक अक्षरक संग रहैत अछि। **जेना-**

(क) ं = गंगा, गङ्गा

(ख) ं = पंच, पञ्च

(ग) ं = खंड, खण्ड

(घ) ं = गेंद, गेन्द

(ङ) ं = खंभा, खम्भा इत्यादि...।

11. प्रश्न : अः = ... + ... ?

उत्तर : a. अ + ह् = अः - (:)

कारण, विसर्गक उच्चारण आधा 'ह' यानी 'ह्' के समान होइत अछि। ऐ प्रकारे दीर्घ स्वर प्रकरण समाप्त भेल। आब प्लुत स्वरक विषयमे जानी-

3. प्लुत स्वर : जइ स्वरकेँ बजैमे ह्रस्व स्वरसँ तीगुणा समय लगैत अछि; ओकरा प्लुत स्वर कहल जाइत अछि।

अथवा- जइ स्वरमे तीन मात्रा होइत अछि; ओकरा प्लुत स्वर कहल जाइत अछि।

नोट :- ई वर्ण वा अक्षरमे नहि पाओल जाइत अछि। ई स्वर शब्दमे रहैत अछि।

व्याख्या : ई प्राय: चिल्लाइ वा पुकारैकाल अर्थात् सम्बोधनक समय प्रयुक्त होइत अछि। ऐ स्वरकेँ दर्शेबाक लेल स्वर लिख कऽ बीच या आगूमे तीन (३) अथवा सम्बोधनक चिह्न (!) लिख देल जाइत अछि। अत: जेतए-केतौ (३) वा (!) लिखल रहैत अछि तँ समझबाक चाही जे प्लुत स्वरक प्रयोग भेल अछि। **जेना-**

1. ऊँ या ओ३म् = अ+उ+म्

ऐठाम 'अ' तथा 'उ' मऽ 1-1 मात्रा एवम् म् मऽ 1/2 मात्रा अछि। कुल 2.5 (अढ़ाइ) मात्राक योग बनि रहल अछि; परञ्च ध्वनि प्रवाहक

कारणसँ तीन (3) मात्रा लऽ कऽ 'ऊँ' शब्दक उच्चारण कएल जाइत अछि। 'ओ३म्' शब्दक उच्चारणमे जखन अन्तिम वर्णक म् के उच्चारण होइत अछि; तखन ओठ बन्द रहक चाही। कारण 'म' मे हलन्त (हल्) लागल अछि। ओठ खुजलासँ उच्चारण अशुद्ध भऽ जाएत। **जेना-**

ओ३म्, विश्वानि देव सवित:

दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव।। हरि ऊँ तत्सत्।।

उदाहरण : (2) हे सरस्वती! हमर रक्षा करू।

हे = ह् + अ + इ {अ + इ = ए}

* ऐठाम 1/2 + 1 + 1 = 2.5 अर्थात् सम्बोधनकेँ ध्वनि प्रवाहक कारणेँ तीन मात्राक प्रयोग भेल अछि; तँए 'हे' मे प्लुत स्वर अछि।

उदाहरण : (3)

भैया हौ ! एमहर आबह।

'हौ' = ह् + औ

➡ ह् + अ + ओ {: अ + ओ = औ – समी. 1- वृद्धि सन्धिसँ

➡ ह् + अ + अ + उ {अ + उ = ओ – ,, ,, गुण सन्धिसँ

= 1/2 + 1 +1 + 1 = 3.5 मात्रा।

अत: 'हौ' मे 3.5 मात्रा हेबाक कारणेँ प्लुत स्वर अछि।

उदाहरण : (4) समी. (4) सँ वृद्धि सन्धिसँ

हौ = ह् + औ = ह् + आ + औ

= ह् + अ + अ + अ + ओ = ह् +अ+अ+अ+अ+उ

= 1/2 +1 +1 +1 +1 +1 = 5.5 मात्रा। अर्थात् प्लुत स्वर।

* मात्रा विकार :- बारह खड़ी + चारि खड़ीमे सेहो-

	अ a x	आ aa ा	इ i ि	ई ee ी	उ u ु	ऊ oo ू	ए e े	ऐ ai ै	ओ o ो	औ au ौ	अं an ं	अ: ah :
क्+ k+	क ka	का kaa	कि ki	की kee	कु ku	कू koo	के ke	कै kai	को ko	कौ kau	कं kan	क: kah
चारि खड़ी												
क्+ k+	ऋ ri ृ कृ kri	ॠ ree ॄ कॄ kree	ऌ lri x क्ऌ kalri	ॡ Lree X क्ॡ Klree	मात्रा विचार समाप्त							

* व्यंजन वर्ण वा अक्षर-पूर्वमे वर्णित भऽ चुकल अछि। आब किछु प्रश्न संयुक्त व्यंजन वर्ण वा अक्षरसँ सम्बन्धित परिशिष्टकेँ उद्धृत कएल जा रहल अछि। **जेना-**

प्रश्न : 'क्ष' कोन दू वर्णक वा अक्षरक मेलसँ बनल अछि?

उत्तर : (क) 'क्ष', क् + ष के मेलसँ बनल अछि।

सिद्धि : 'क्ष' = k Sha {यक् + ष = यक्ष

(1) → क्+ष

प्रश्न : 'क्ष' के निर्माण केतेक प्रकारसँ भऽ सकैत अछि?

उत्तर : (1) व्याकरण शास्त्रसँ स्पष्ट अछि जे ककार + सकार के मेलसँ ‘क्ष’क निर्माण होइत अछि।

(2) क्ष = ksha

क्+ष्

पक्+ष्= पक्ष

वस्तुत: सकार तीनटा होइत अछि।

जेना- श ष स

sh sha s

ऐठाम ‘श’ मे h स्वरक पूर्ति कए रहल अछि।

(3) क्ष = k sh {अक्+शर = अक्षर}

क् + श

(4) क्ष= ksh

क्+श् = दक्+श् =दक्ष

(5) क्ष= k s

क्+स् = तक्+स् =तक्ष

(6) श्+ष् = क्ष्; जेना- दृश्+ष्यति

= द्रक्ष्यति। (संस्कृत)

नोट :- ‘ककार’कैं 1/2 मात्रा तथा ‘सकार’कैं 1 मात्रा वा 1/2 मात्राक मेलसँ 1 मात्राबला ‘क्ष’ के निर्माण पाँच प्रकारसँ होइत अछि।

प्रश्न : ‘त्र’ कोन दू वर्णक मेलसँ बनल अछि आ केतेक प्रकारसँ बनि सकैत अछि?

उत्तर : ‘त्र’ त्+र के मेलसँ बनल अछि आ दू प्रकारसँ बनि सकैत अछि। **जेना-**

(क) त्र = T ra {अत्+र = अत्र}

त्+र = त्र

(ख) त्र = T r a {पत्+र् = पत्र}

त्+र्

प्रश्न : 'ज्ञ' कोन दू वर्णक मेलसँ बनल अछि आ कतेक प्रकारसँ बनि सकैत अछि?

उत्तर : 'ज्ञ' ज्+ञ के मेलसँ बनल अछि आ चारि प्रकारसँ बनि सकैत अछि।

(१) ज्ञ = j ynа

ज् + ञ {यज्+ञ=यज्ञ}

(२) ज्ञ = j ynа {अर्ध स्वरक लोप}

ज् + न {यज्+न=यज्ञ}

(३) ज्ञ = j na (पूर्ण स्वरक लोप)

ज् + न् {यज्+न्=यज्ञ}

(४) ज्ञ = j yna

ज् + ञ् {यज्+ ञ्=यज्ञ}

* अर्ध स्वर वर्ण वा अक्षरसँ सम्बन्धित-

प्रश्न : 'य' कोन दू वर्णक मेलसँ बनल अछि?

उत्तर : 'य' इ + अ के मेलसँ बनल अछि।

प्रश्न : इ + अ के मेलसँ नया वर्ण कोन बनत?

उत्तर : इ + अ के मेलसँ नया वर्ण 'य' बनत।

प्रश्न : इ + अ =...?

हल : इ + अ

= य् + अ {∵ इ = य्}

= य

प्रश्न : ई + अ =...?

हल : ई + अ

= य् + अ {∵ ई = य्}

= य

ऐ प्रकारेँ :- व, र तथा ल के सम्बन्धमे प्रश्न अछि।

जेना- प्रश्न : उ + अ =...?

हल : उ + अ

= व् + अ {∵ उ = व्}

= व

प्रश्न : ऊ + अ =...?

हल : ऊ + अ

= व् + अ {∵ ऊ = व्}

= व

प्रश्न : ऋ + अ =...?

हल : ऋ + अ

= र् + अ {∵ ऋ = र्}

= र

प्रश्न : ऌ + अ =...?

हल : ऌ + अ {∵ ऌ = ल्}

= ल् + अ = ल

❑

वर्ण विश्लेषण (विस्तार)

वर्ण विश्लेषण :- कोनो शब्दक प्रत्येक ध्वनिकेँ अलग-अलग लिखबाक कार्यकेँ वर्ण विश्लेषण वा वर्ण विस्तार कहल जाइत अछि।

जेना-

1. श्री = श् + र् + ई। राम = र्+आ+ म्+अ।

   जय = ज् + अ + य् +अ। सीता = स्+ई+त्+आ।

   राधा = र् + आ + ध् +आ। श्याम = श्+य्+आ+म्+अ।

   परीक्षा = प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ

   विज्ञान = व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ

   मोहन = म् + ओ + ह् + अ + न् + अ

   कुमार = क् + उ + म् + आ + र् + अ

   प्रसाद = प् + र् + अ + स् + आ + द् + अ

   चन्द्र = च् + अ + न् + द् + र् + अ

   सिंह = स् + इ + ङ् + ह् + अ

   यादव = य् + आ + द् + अ + व् + अ

   उमेश = उ + म् + ए + श् + अ

❑

वर्ण संयोजन या ध्वनि-मेल

वर्ण संयोजन :

अलग-अलग ध्वनिकेँ जोड़ि कऽ शब्द बनेबाक काजकेँ वर्ण संयोजन या ध्वनि-मेल कहल जाइत अछि। **जेना-**

(1) ह्+अ+म्+आ+र्+आ द्+ए+श्+अ
म्+अ+ह्+आ+न् ह्+ऐ। य्+अ+ह्+अ
उ+द्+आ+र्+अ ह्+ऋ+द्+अ+य्+अ
व्+आ+ल्+ए ऋ+ष्+इ+य्+ओं क्+आ,
स्+आ+ध्+उ - स्+अं+त्+ओं क्+आ
द्+ए+श्+अ ह्+ऐ । य्+अ+ह्+आँ क्+आ
ज्+ञ्+आ+न्+अ - व्+इ+ज्+ञ्+आ+न्+अ,
स्+अ+भ्+य्+अ+त्+आ - स्+अं+स्+क्+ऋ+त्+इ
व्+इ+श्+व्+अ म्+ए
अ+न्+उ+क्+अ+र्+अ+ण्+ई+य्+अ ह्+ऐ।

शब्द निर्माण :- हमारा देश महान् है। यह उदार हृदय वाले ऋषियों, साधु-सन्तों का देश है। यहाँ का ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता-संस्कृति विश्व में अनुकरणीय है।

मैथिली अनुवाद- हमर देश महान् अछि। ई देश ऋषिगणक आ साधु-सन्त लोकनिक देश छी। एतौका ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता-संस्कति विश्वमे अनुकरणीय अछि।

❑

शुद्ध-शुद्ध अंग्रेजी लिखैक नियम :-

उपधा :- अन्तिम वर्णसँ पूर्व के वर्णकेँ उपधा कहल जाइत अछि।

नियम- (1) यदि उपधासँ पूर्व कोनो स्वर वर्ण वा पञ्चम वर्ण रहैत अछि; तखन अन्तिम 'अ' केँ लोप भऽ जाइत अछि।

नियम- (2) ई नियम प्रत्येक शब्द-खण्ड (Syllable) पर लागू होइत अछि। एक शब्द खण्डक लेल कम-सँ-कम एक स्वर वर्ण रहब परम आवश्यक अछि।

नियम- (3) अंग्रेजी लिखैमे aa के स्थानपर a, ee के स्थानपर i एवम् oo के स्थानपर u के प्रयोग होइत अछि।

शब्द खण्ड (Syllable) चारि प्रकारक होइत अछि। जेकर खण्ड नहि होइत अछि, ओकरा मोनो (Mono) अर्थात् अखण्डित शब्द खण्ड अथवा तद्रूप शब्द खण्ड कहल जाइत अछि। **जेना-**

Noun – No + un; दुनू के अर्थ...

नकारात्मक अछि। अत: स्वर (Vowel) रहला उपरान्तो खण्ड नहि होएत।

* जइ शब्दक दूटा खण्ड होइत अछि; ओकरा (Di Syllable) 'द्विखडक शब्द खण्ड' कहल जाइत अछि। **जेना-** Pronoun

Pro+noun (प्रो+नॉन्)

ऐठाम 'प्रो' मे ओ (o) तथा noun (नॉन्) मे 'o' तथा 'u' दूटा स्वर (Vowel) अछि; जे खुशीक बात अछि।

* जइ शब्दक तीनटा खण्ड होइत अछि; ओकरा त्रिखण्डक शब्द खण्ड (Tri syllable) कहल जाइत अछि। **जेना-** Adjective.

= Ad+jec+tive

प्रत्येक खण्डमे स्वर चिह्ननांकित अछि।

* जइ शब्दक चारिटा खण्ड वा चारिसँ अधिक शब्द खण्ड होइत अछि; ओकरा बहुखण्डक शब्द-खण्ड (पॉली सिलेवल- Poly syllable) कहल जाइत अछि। जेना Interjection = In+ter+jec+tion एतए प्रत्येक खण्डमे स्वर (Vowel) चिह्न अंकित अछि। अन्तिम खण्डमे दूटा स्वर अछि; जे खुशीक बात अछि। कम-सँ-कम एकटा स्वर वर्ण (vowel) आवश्यक होइत अछि।

* आब किछु शब्दकेँ अंग्रेजीमे लिखैक अभ्यास देल जा रहल अछि। **जेना-**

श्री= श्+र्+ई Shree

Shri या sri i

राम= र्+आ+म्+~~अ~~

R a m

जय= ज्+अ+य्+~~अ~~

J a y

* नियमानुसार उपधासँ पूर्व स्वर रहबाक कारणेँ अन्तिम 'अ' लोप भऽ रहल अछि आ सभ वर्णक लेल अंग्रेजीक अक्षर लिखल जा रहल अछि। ओना, 'अ' दृष्टिगोचर भेलापर 'अ' केँ गिनैत तीन नम्बरपर यदि स्वर या पञ्चम वर्ण आबि जाइत अछि; तखन 'अ' के

लोप (↗) भऽ जाइत अछि। किछु आरो उदाहरण-

मोहन= म्+ओ+ह्+अ+न्+~~अ~~↗

M o h a n

कुमार= क्+उ+म्+आ+र्+~~अ~~↗

K u m a r

चन्द्र= च्+अ+न्+द्+र्+अ

Ch a n d r a

ऐठाम 'अ' के वाँया तीन नम्बरपर स्वर नइ अछि। तीन नम्बरपर अर्थात् उपधासँ पूर्व व्यंजन वर्ण 'द्' अछि। तँए 'अ' के लोप नहि भेल।

प्रसाद= प्+र्+अ+स्+आ+द्+~~अ~~↗

P r a s a d

सिंह= स्+इ+ङ्+ ह्+~~अ~~↗

S i ng h (उपधासँ पूर्व पञ्चम वर्ण)

देवेन्द्र= द्+ए+व्+ए+न्+द्+र्+अ

D e v e n d r a

कृष्ण= क् + ऋ + ष् + ण् + अ

K r i sh n a

* ऐ प्रकारे कोनो शब्दकेँ वा नाओंक (Name) वर्ण-विश्लेषण करि अंग्रेजी लिखलासँ शुद्ध-शुद्ध अंग्रेजी लिखब सम्भव अछि। अभ्यासक महत्त्व अछि। आब द्विखण्डक अर्थात् 'डाय सिलेवल'क उदाहरणकेँ देख समझबाक प्रयास करी...।

जेना- पटना= प्+अ+ट्+अ+न्+आ

पट् + ना (द्विखण्डक)

Pat na

* ई सभ सामान्य जानकारी छी। वृहद् जानकारीक लेल अंग्रेजी व्याकरण पठनीय अछि। अस्तु, ऊँ तत् सत्।।

❑

वर्णक उच्चारण स्थान-

पूर्वक अध्ययणसँ पता चलैत अछि जे सभ भाषामे स्वरक संख्यामे अन्तर अछि; परञ्च व्यंजन सभमे (देवनागरी लिपिमे) समान अछि। ई प्रकरण कुल वर्णमालाक जे वर्ण अछि; ओकर उच्चारण स्थानसँ सम्बद्ध अछि। ऐ प्रकरणसँ बिहार बोर्ड वा अन्य राज्यक बोर्डमे प्रश्न रहैत अछि। बिहार बोर्डमे, सी-टेट, एस टेट आ यु.पी.- टेटमे अनिवार्य प्रश्नक रूपमे रहैत अछि। तँए अध्ययन अपेक्षित अछि। थोड़बे बुद्धिक प्रयोगसँ संस्कृतक सूत्र माध्यमसँ एकरा आसानीसँ जानल जा सकैत अछि आ वर्णकेँ अक्षरक रूपमे व्यक्त कएल जा रहल अछि।

महर्षि पाणिनिक प्रसाद रूप, ऐ सूत्रकेँ मन्त्र रूपे जरूर कण्ठाग्र करी...। **जेना-**

1. अ कु ह विसर्ज नियानाम् कण्ठ :-

   अ, आ, कु, यानी कवर्गक पाँचो वर्ण (क, ख, ग, घ, ङ) तथा ह एवम् विसर्गक (: = ह्) उच्चारण स्थान कण्ठ छी; अर्थात् ई सभ कण्ठसँ बाजल जाइत अछि। अतिरिक्त - अ:

* ध्यातव्य :- (a) कु = कवर्ग

(b) विसर्ज = विसर्ग; किएक तँ प्रत्यय जुड़लासँ 'ग' = 'ज' आ 'ज' = 'ग' भऽ जाइत अछि।

(c) प्रत्यय = आनाम् या आम्।

2. इ चु य शानाम् तालुः :-

इ, ई, चु यानी चवर्गक पाँचो वर्ण (च, छ, ज, झ, ञ) तथा 'श' के उच्चारण स्थान तालु (जीहक तर बला भाग) छी।

3. ऋ टु र षाणाम् मुर्द्धा :-

ऋ, ॠ, टु यानी टवर्गक पाँचो वर्ण ट, ठ, ड, ढ़, ण तथा 'र' एवम् 'ष' के उच्चारण स्थान मुर्द्धा छी; अर्थात् ई मुर्द्धासँ बाजल जाइत अछि। (मुर्द्धा- ऊपरक दाँतसँ आगूक भाग)

4. लृ तु ल सानाम् दन्ताः :-

लृ, ॡ, तु यानी त, थ, द, ध, न तथा 'ल' एवम् 'स्' के उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।

5. उ पु- पध्मानियानाम् ओष्ठौ :-

उ, ऊ, पु यानी प, फ, ब, भ, तथा 'म' के उच्चारण ओठ (होठ) सँ होइत अछि।

6. ञ म ङ ण नाम् नासिका च :-

पाँचो वर्गक पञ्चम वर्ण, ङ, ञ, ण, न तथा 'म' के उच्चारण स्थान नाँक छी; अर्थात् ई पाँचो पञ्चम वर्ण अपना-अपना वर्गक साथो रहैत अछि आ बजलो जाइत अछि, मुदा विशेष रूपसँ एकरा बजैमे नाकक महत्त्व होइत अछि।

7. एदैतोः कण्ठतालु :-

ए तथा ऐ के उच्चारण कण्ठ आ तालुक मेलसँ होइत अछि।

8. ओदौतोः कण्ठौष्ठम् :-

ओ तथा औ के उच्चारण कण्ठ आ ओठक मेलसँ होइत अछि।

9. <u>व</u>कारस्य दन्त्यौष्ठम् :-

'व' के उच्चारण दाँत आ ओठक मेलसँ होइत अछि।

ऐ नव (9) सूत्रक माध्यमसँ कुल 47 वर्णक उच्चारण स्थानकेँ दर्शौल गेल अछि। अक्षरक निच्चाँ रेखा अंकित अछि; जइसँ सूत्र आसानीसँ पता लगैत अछि जे कोन अक्षरक उच्चारण केतए-सँ होएत।

1. अं = a n
   ↳ अ+न् (47+2+3= 52)

   कण्ठ + नाँकसँ उच्चारित।

2. अः = a h
   ↳ अ+ह्

   कण्ठसँ उच्चारित।

* आब तीनटा अक्षर शेष अछि।

3. क्ष = <u>K</u> <u>sha</u>
   ↳ क्+ष

   कण्ठ + मुर्द्धासँ उच्चारित।

4. त्र = T ra
   ↳ त् + र

   दाँत+मुर्द्धासँ उच्चारित।

3. ज्ञ = J <u>yna</u>
   ↳ ज्+ञ :- तालु+नाकसँ उच्चारित।

❑

शेष परिभाषा प्रकरण-

प्रश्न : अल्पप्राण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : प्रत्येक वर्गक प्रथम, तृतीय, पञ्चम वर्ग आ अन्त:स्थ य, र, ल, व, एवम् सभ स्वर वर्ण अल्पप्राण कहबैत अछि।

* क्, च्, ट्, त्, प्, ग्, ज्, ड्, द्, ब्, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, आ य्, र्, ल्, व्, एवं अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ = कुल 32 वर्ण अल्पप्राणक श्रेणीमे अबैत अछि।

प्रश्न : महाप्राण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : प्रत्येक वर्गक द्वितीय आ चतुर्थ एवं ऊष्म वर्णकेँ महाप्राण कहल जाइत अछि।

* सामान्यतया महाप्राणमे हकार (H) के ध्वनि सुनाइ पड़ैत अछि। **जेना-**

ख् (kh), छ् (chh), ठ् (th), थ् (th), फ् (ph), घ् (gh), झ् (jh), ढ् (dh), ध् (dh), भ् (bh) एवं श् (sh), ष् (sh), स् (s), ह् (h) = कुल 14 वर्ण महाप्राण श्रेणीमे अबैत अछि।

प्रश्न : धोष वर्ण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : प्रत्येक वर्गक तृतीय, चतुर्थ आ पञ्चम वर्ण तथा अन्त:स्थ वर्ण एवं 'ह' केँ 'घोष वर्ण' कहल जाइत अछि।

जेना- ग्, ज्, ड्, द्, ब्, घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् एवम् य्, र्, ल्, व् तथा ह् = कुल 20 वर्ण घोष वर्णक श्रेणीमे अबैत

अछि।

प्रश्न : अघोष वर्ण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : प्रत्येक वर्गक प्रथम आ द्वितीय वर्ण तथा ऊष्म वर्णकेँ अघोष वर्ण कहल जाइत अछि। **जेना-** क्, च्, ट्, त्, प्, ख्, छ्, ठ्, थ्, फ् तथा श्, ष्, स् के अघोष वर्ण अर्थात् कुल = 13 वर्ण अघोष वर्णक श्रेणीमे अबैत अछि।

प्रश्न : अनुनासिक वर्ण केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : प्रत्येक वर्गक पञ्चम वर्णकेँ अनुनासिक वर्ण कहल जाइत अछि। **जेना-** ङ्, ञ्, ण्, न्, म् अर्थात् कुल 5 वर्ण अनुनासिकक श्रेणीमे अबैत अछि।

प्रश्न : अयोगवाह केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : अनुस्वार (ं) आ विसर्ग (:) के अयोगवाह कहल जाइत अछि।

अयोगवाह :- अ+युज्+घञ्+वह्+घञ्

= अ+योग+वाह

= अयोगवाह

भावार्थ :- जे योग (मान) के वहन (ढोनाइ) के क्रिया नहि करैत अछि; अर्थात् विसर्ग (:) = h, वर्णक संग रहियो कऽ अप्पन मान ½ नहि जोड़ैत अछि। अही प्रकारे छन्दमे अनुस्वार जँ एकेटा रहैत अछि अथवा बदलामे पञ्चम वर्णक प्रयोग रहैत अछि; तँ ओहो नहि गिनल जाइत अछि। दूटा रहलापर एक मात्राक गिनती के विधान अछि। जेना-

Kh = ख्; जबकि K= क् तथा h= ह्; अर्थात् दूटा वर्ण आधा-आधा मिल कऽ एक मात्रा भऽ सकै छल आ हलन्त हटि सकै छल;

परन्तु, से नहि भेल आ ख् भेल। चुँकि h तथा n, स्वरक पंक्तिक हिसाबे स्वर वर्णमे गिनल जाइत अछि। भाव ई जे विसर्ग (:) आ अनुस्वर (ं) रहियो कऽ नइ अछि आ जँ अछि तँ एकर मान = 0 अछि।

दोसर उदाहरणक रूपमे सभ महाप्राण वर्ण- जइमे h के प्रयोग भेल अछि। जेना-

(1) ख् = k+h

क्+ह्

1/2+0=1/2

(2) घ् = g+h

ग्+ह्

1/2+0=1/2

ध्यातव्य ई अछि जे h के गिनती स्वरमे हेबाक कारणे उच्चारणमे सहयोग दैत अछि; लेकिन, मान = 0 होइत अछि।

* व्याकरणक अनुसार यएह स्थिति पञ्चम वर्णक अर्थात् अनुस्वारक सेहो होइत अछि। अनुस्वार (ं) के वृहद् रूप पञ्चम वर्ण (हल् मे) छी आ सुक्ष्म रूप विन्दु, जे अक्षरक ऊपर लगैत अछि।

अनुस्वार अष्टसिद्धिक रूप छी। कहल गेल अछि-

।। विन्दुसँ सिन्धु आ सिन्धुमे विन्दु।।

(क) अं = a+n

अ+न्

1+1/2 = 1.5 ध्वनि प्रवाहक कारणे दीर्घ स्वर

(ख) अः = a+h

अ+ह्

1+1/2 = 1.5

* निष्कर्ष : स्वरक संग मात्रा जोड़ाइत अछि किन्तु, व्यंजनक संग मात्रा नहि जोड़ाइत अछि।

प्रश्न : जिह्वामूलीय केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : 'क' आ 'ख' सँ पहिने यदि अर्ध विसर्गक प्रयोग होइत अछि; तब ओकरा जिह्वामूलीय कहल जाइत अछि।

जेना- : ≍ क, ≍ ख

* सामान्य भाषामे एकरा ऊपर चाँद आ नीचा चाँद कहल जाइत अछि। ओना, ई अर्ध विसर्ग भेल।

प्रश्न : उपध्मानीय केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : प आ फ के पूर्व यदि अर्ध विसर्गक प्रयोग होइत अछि, तखन ओकरा उपध्मानीय कहल जाइत अछि। **जेना-**

≍ प, ≍ फ

प्रश्न : बलाघात या स्वराघात केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : शब्दक उच्चारण करैमे जइ वर्ण वा अक्षरपर अन्य वर्णक अपेक्षा अधिक बल (जोर) देल जाइत अछि; ओकरा बलाघात वा स्वाराघात कहल जाइत अछि। **जेना-**

'दिल्ली'मे 'दि' पर।

'सत्य'मे 'स' पर।

‘उल्लू’मे ‘उ’ पर।

* हस्व स्वरबला शब्दकेँ उपधापर। **जेना-**

‘अदरख’मे र पर। ‘दुलहीन’मे ‘ही’ पर। ‘किसमिस’मे ‘मि’ पर।

* संयुक्ताक्षर रहलापर अथवा द्वित्व रहलापर आदि वर्णमे स्वराघात होइत अछि। **जेना-** हिन्दीमे ‘हि’ पर। आनन्दमे ‘मे’ आ पर। मिथ्यामे ‘मि’पर। चक्कीमे ‘च’ पर तथा लग्गीमे ‘ल’ पर।

प्रश्न : सुरलहर या अनुतान केकरा कहल जाइत अछि?

उत्तर : सुरक उतार-चढ़ाव या आरोह-अवरोहक जे लहर बनैत अछि; ओकरा सुरलहर या अनुतान कहल जाइत अछि।

वर्ण प्रकरण समाप्त।।

❑

अध्याय : 2

व्याकरणक विशेष नियम

* शब्द या धातु (क्रिया) सँ प्रत्यय जुड़लापर ओकरा आदिवर्ण, उपधा आ 'अन्तिम वर्ण'मे महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन होइत अछि; जे द्रष्टव्य अछि। (संकेत: → के)

1. हल् वर्ण → अ, अ → आ, आ → ई, इ → ए, ए → अय्
   तथा अय् → आय्।
2. उ → ओ, ओ → अव्, अव → आव्
3. क् → च् तथा च् → क्।
4. ग् → ज् तथा ज् → ग्।
5. 'हल् वर्ण'मे ई (ि) के वृद्धि।
6. ऋ → अर् या आर् आदेश।

कभी-कभी- क् → ज् तथा ज् → क्। ध्यातव्य :- ध्यान दइक योग्य-

* ए → अय् = ऐ = (ै)
* ओ → अव् = औ (ौ)

वर्णरुप – अक्षर रुप- मात्रा
अय् – ऐ – ै
अव् – औ – ौ

प्रश्न : व्यक्ति = ...?

वि = व्+इ → ए

= व्+ए

= वे ans

(इ → ए, विशेष नियमसँ)

* व्यक्ति = व्+य्+अ+क्+त्+इ

= व्+इ+अ+क्+त्+इ

= व्+ए+अ+क्+त्+इ

=वे+अक्ति

=वे+ऽ क्ति (ऽ अवग्रहक लोप)

=वेक्ति ans.

नोट : व्याकरणक विशेष नियमक प्रयोग अधिकतर प्रत्यय प्रकरणमे होइत अछि। जइमे तद्धित प्रत्यय आ कृदन्त प्रत्यय प्रमुख अछि।

❑

2. सन्धि प्रकरण

सन्धि :- दू अत्यन्त संयोगी वर्णक मेलसँ उत्पन्न विकारकेँ सन्धि कहल जाइत अछि। **जेना-**

* राम + अयण = रामायण

र्+आ+म्+[अ # अ]+य्+अ+ण्+अ

प्रश्न : 'रामायण'मे कोन-कोन वर्णक सन्धि भेल अछि?

उत्तर : 'रामायण'मे अ+अ के सन्धि भेल अछि।

* जगत्+अम्बा = जगदम्बा

ज्+अ+ग्+अ+[त् # अ]+म् ब्+आ

[त्+अ' दुनू के बीच सन्धि भेल अछि।]

* यश: + दा = यशोदा

य्+अ+श्+[:# द्]+आ

[विसर्ग : + द् के सन्धि।]

सन्धिक भेद :-

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

(1) स्वर सन्धि : 'स्वर'क संग 'स्वर' के मेलसँ उत्पन्न विकारकेँ स्वर सन्धि कहल जाइत अछि। **जेना-**

राम+अनुज = रामानुज। नील+अम्बर = नीलाम्बर।

विद्या+अर्थी = विद्यार्थी। महा+आत्मा = महात्मा।

कवि+इन्द्र = कवीन्द्र। महा+इन्द्र = महेन्द्र।

* शर्त : स्वर+स्वर = स्वर सन्धि।

(2) व्यंजन सन्धि :- व्यंजन (हल्) वर्णक संग स्वर अथवा व्यंजन (हल्) वर्णक मेलसँ उत्पन्न विकारकेँ व्यंजन सन्धि कहल जाइत अछि। **जेना-**

(1.) जगत्+ईश = जगदीश।

ज्+अ+ग्+अ+[त् # ई]+श्+अ

('त्+ई' के सन्धि भेल अछि)

(2.) उत्+नति = उन्नति।

उ+[त् # न्]+अ+त्+इ

('त्+न्' के सन्धि भेल अछि)

(3) वि+छेद = विच्छेद।

व्+[इ # छ्]+ए+द्+अ

('इ+छ्' के सन्धि भेल अछि)

शर्त : (1) हल् + स्वर = व्यंजन सन्धि

(2) हल् + हल् = व्यंजन सन्धि

(3) स्वर + हल् = व्यंजन सन्धि

अर्थात् तीन स्थितिमे व्यंजन सन्धि होइत अछि।

(3) विसर्ग सन्धि : विसर्ग (:) के संग स्वर अथवा व्यंजन वर्णक मेलसँ उत्पन्न विकारकेँ विसर्ग सन्धि कहल जाइत अछि। **जेना-**

(क) निः + अर्थ = निरर्थ

न्+इ+[: # अ]+र्+थ्+अ (विसर्ग (:) + अ के सन्धि भेल अछि।)

(ख) यशः + दा = यशोदा

य्+अ+श्+ : # द् +आ

('विसर्ग (:) + द्' के सन्धि भेल।)

मनः + ज = मनोज

म्+अ+न्+अ+ : # ज् +अ

(विसर्ग (:) + ज्' के सन्धि भेल।)

शर्त :- () विसर्ग (:) + स्वर = विसर्ग सन्धि।

() विसर्ग (:) + व्यंजन (हल्) वर्ण = विसर्ग सन्धि

अर्थात् '+' के पाछू सदिखन विसर्ग (:)।

*** स्वर सन्धिक भेद :-**

(मैथिलीमे स्वर सन्धिकेँ छह भेदक वर्णन आ पठन-पाठन होइत अछि।

1. दीर्ध सन्धि
2. गुण सन्धि
3. वृद्धि सन्धि
4. यण सन्धि
5. अयादि सन्धि
6. पूर्वरूप सन्धि

दीर्घ सन्धि :

सूत्र :- अक: सवर्णे दीर्घ:

(क) (ख) (ग)

*** प्रत्याहार-**

(क) अक् = अ, इ, उ, ऋ, लृ।

(ख) सवर्णे = समान वर्णमे अर्थात् आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ ।

(ग) दीर्घ : = दुनू के योग दीर्घ होइत अछि।

व्याख्या : दू समान ह्रस्व वा दीर्घ स्वर मिलि कऽ दीर्घ भऽ जाइत अछि। **जेना-**

() अवर्णक (अ, आ) सन्धि :-

(a) अ+अ= आ (ा)

* ह्रस्व + ह्रस्व = दीर्घ।

(b) अ+आ= आ (ा)

* ह्रस्व+दीर्घ= दीर्घ।

(c) आ+अ= आ (ा)

* दीर्घ+ह्रस्व= दीर्घ।

(d) आ+आ= (ा)

* दीर्घ+दीर्घ= दीर्घ।

नोट :- फलाफली दीर्घ होइत अछि। अहिना-

(2.) इवर्णक (इ, ई) सन्धि-

(a) इ+इ= ई - (ी)

(b) इ+ई= ई - (ी)

(c) ई+इ= ई - (ी)

(d) ई+ई= ई - (ी)

(3.) उवर्णक (उ, ऊ) सन्धि-

(a) उ+उ= ऊ (ु)

(b) उ+ऊ= ऊ (ु)

(c) ऊ+उ= ऊ (ु)

(d) ऊ+ऊ= ऊ (ु)

(4.) ऋवर्णक (ऋ, ॠ) सन्धि-

(a) ऋ+ऋ= ॠ (ृ)

b, c आ d पाठ्यक्रमसँ बाहर।

(5.) लृवर्णक (लृ, ॡ) सन्धि-

(a) लृ+लृ= ॡ (x)

b, c आ d पाठ्यक्रमसँ बाहर।

* आब पहिल बनाबटपर सन्धि-विच्छेदक उदाहरण-

(१) a. अ+अ= आ (ा)

नील+आम्बर= नीलाम्बर

न्+ई+ल+अ#अ+म्+ब्+अ+र्+अ

अर्थात् नीलाम्बरमे 'अ+अ' के सन्धि भेल अछि।

पीत+अम्बर= पीताम्बर। लोक+अपवाद= लोकापवाद

लाभ+अर्थी= लाभार्थी। लोकानुग्रह= लोक+अनुग्रह।

राम+अर्चा= रामार्चा

परमार्थ=परम+अर्थ। पर+अर्थ= परार्थ

दैत्यारि= दैत्य+अरि (इन्द्र)

अद्य+अपि= अद्यापि (आइयो/आज भी)

कृत+अन्त= कृतान्त (यमराज)

जन+अर्दन= जनार्दन (कृष्ण)

शुक्ल+अम्बरा= शुक्लाम्बरा (सरस्वती)

श्वेत+अम्बरा= श्वेताम्बरा (सरस्वती)

देश+अन्तर= देशान्तर (देशक बाहर, विदेश)

न+अन्यथा= नान्यथा (या नहि तँ)

कुश+अग्र= कुशाग्र (कुशक ऐगला भाग)

खर+अरि= खरारि (राम)

मुरारि= मुर+अरि (कृष्ण)

पुर+अरि= पुरारि (शिव)

पदार्पण= पद+अर्पण। राम+अवतार= रामावतार

दश+अवतार= दशावतार। जन्म+अन्तर= जन्मान्तर।

धर्म+अर्थ= धर्माथ। सत्य+अर्थ= सत्यार्थ।

अन्न+अभाव= अन्नाभाव। अन्यान्य= अन्य+अन्य।

सर्व+अंग= सर्वांग। स+अक्षर= साक्षर इत्यादि...।

(B) अ+आ= आ – (ा)

देव+आलय= देवालय

द्+ए+व्+अ#आ+ल्+अ+य्+अ

ऐ प्रकारे-

हिम+आलय= हिमालय। शिव+आलय= शिवालय

कार्य+आलय= कार्यालय। वाचन+आलय= वाचनालय

भोजन+आलय= भोजनालय। न्याय+आलय= न्यायालय।

देव+आलय= देवालय। देव+आत्मा= देवात्मा।

धर्म+आत्मा= धर्मात्मा। परम+आत्मा= परमात्मा।

जीव+आत्मा= जीवात्मा। प्रेत+आत्मा= प्रेतात्मा।

भूत+आत्मा= भूतात्मा। जनक+आत्माजा= जनकात्मजा।

शिष्ट+आचार= शिष्टाचार। परम+आनन्द= परमानन्द।

महत्त्व+आकांक्षी= महत्त्वाकांक्षी। सर्व+आधार= सर्वाधार।

रत्न+आकर= रत्नाकर (समुद्र)

वात+आवरण= वातावरण। राज+आज्ञा= राजाज्ञा।

सत्य+आग्रह= सत्याग्रह। एक+आनन= एकानन (विष्णु)

पञ्च+आनन=पञ्चानन (शिव)। दश+आनन= दशानन (रावण)

गज+आनन= गजानन (गणेश)। सिंह+आसन= सिंहासन

कमल+आसन= कमलासन। पद्म+आसन= पद्मासन

गरुड़+आसन= गरुड़ासन

पवन+आत्मज= पवनात्मज (हनुमान)

वृषभ+आसन= वृषभासन। कमल+आकर= कमलाकर

मेघ+आच्छन= मेघाच्छन। इत्यादि...।

(C) आ+अ= आ (ा)

विद्या+अर्थी= विद्यार्थी

व्+इ+द्+य्+[आ#अ]+र्+थ्+ई

शिक्षार्थी= शिक्षा+अर्थी।

सीमा+अन्त= सीमान्त। महा+अनुभाव= महानुभाव

विद्या+अभ्यास= विद्याभ्यास। रेखा+अंकन= रेखांकन

सेवा+अर्थ= सेवार्थ। यथा+अर्थ= यथार्थ

महा+अर्घ= महार्घ (नमहर हाथ)

महा+अर्णव= महार्णव (महासागर)

करूणा+अमृत= करूणामृत। दया+अवतार= दयावतार

रक्षा+अर्थ= रक्षार्थ। कदा+अपि= कदापि

तथा+अपि= तथापि

(d) आ+आ= आ – (ा)

विद्या+आलय= विद्यालय

व्+इ+द्+य्+ आ#आ +ल्+अ+य्+अ

शिक्षालय= शिक्षा+आलय। महा+आलय= महालय

रमा+आलय= रमालय। महा+आशय= महाशय

महा+आत्मा= महात्मा। महा+आलाप= महालाप

वार्ता+आलाप= वार्तालाप। सदा+आनन्द= सदानन्द

दया+आनन्द= दयानन्द। कला+आत्मक= कलात्मक

चिकित्सा+आलय= चिकित्सालय

2. (a) इ+इ= ई (ी)

कवि+इन्द्र= कवीन्द्र

क्+अ+व्+ इ#इ +न्+द्+र्+अ

गिरि+इन्द्र= गिरीन्द्र। शान्ति+इच्छुकै= शान्तीच्छुकै।

कपि+इन्द्र= कपीन्द्र। मुनि+इन्द्र= मुनीन्द्र

मति+इति= मतीति। अति+इत= अतीत

अभि+इष्ट= अभीष्ट। अति+इव= अतीव

प्रति+इत= प्रतीत। इति+इव= इतीव

(b) इ+ई= ई (ी)

कवि+ईश= कवीश

क्+अ+व्+ इ#ई +श्+अ

कवि+ईश्वर= कवीश्वर। कपि+ईश= कपीश

कपि+ईश्वर= कपीश्वर। गिरि+ईश्वर= गिरीश्वर

मुनि+ईश= मुनीश। मुनि+ईश्वर= मुनीश्वर

अधि+ईश= अधीश। अधि+ईश्वर= अधीश्वर

फणि+ईश= फणीश। फणि+ईश्वर= फणीश्वर

रवि+ईश= रवीश। नीति+ईश= नीतीश

परि+ईक्षा= परीक्षा

(c) ई+इ= ई – (ी)

मही+इन्द्र= महीन्द्र

म्+अ+ह्+ ई#इ +न्+द्+र्+अ

नदी+इन्द्र= नदीन्द्र। शची+इन्द्र= शचीन्द्र

लक्ष्मी+इन्द्र= लक्ष्मीन्द्र। रथी+इन्द्र= रथीन्द्र

महती+इति= महतीति। नारी+इन्दु= नारीन्दु

नदी+इति= नदीति। देवी+इच्छा= देवीच्छा

(d) ई+ई= ई (ी)

महीश= महीश+ईश

म्+अ+ह्+ई#ई+श्+अ

श्री+ईश= श्रीश। नदी+ईश= नदीश

महीश्वर= महीश्वर+ईश्वर। नदी+ईश्वर= नदीश्वर

नारी+ईश्वर= नारीश्वर। पृथ्वी+ईश= पृथ्वीश

सती+ईश= सतीश। देवी+ईश= देवीश

लक्ष्मी+ईश= लक्ष्मीश। महती+ईश= महतीश

गौरी+ईश= गौरीश। रजनी+ईश= रजनीश।

3. (a) उ+उ= ऊ (ू)

भानूदय= भानु+उदय

म्+आ+न्+उ#उ+द्+अ+य्+अ

विधु+उदय= विधूदय

बाहु+उदर= बाहूदर

सु+उक्ति= सूक्ति

गुरु+उपदेश= गुरूपदेश। लघु+उत्तर= लघूत्तर

मधु+उपवन= मधूपवन। मनु+उत्सर्ग= मनूत्सर्ग

मधु+उत्सव= मधूत्सव

(b) उ+ऊ = ऊ (ू)

लघूर्मि= लघु+ऊर्मि

ल्+अ+घ्+ उ#ऊ +र्+म्+इ

मधु+ऊर्मि= मधूर्मि। विधु+ऊर्मि= विधूर्मि

साधु+ऊर्मि= साधूर्मि। सिन्धु+ऊर्मि= सिन्धूर्मि

अम्बु+ऊर्मि= अम्बूर्मि। तालु+ऊष्मा= तालूष्मा

सिन्धु+ऊर्जा= सिन्धूर्जा। मनु+ऊढ़= मनूढ़

अनु+ऊप= अनूप। गुरु+ऊह= गुरूह

ऊप= ऊपर तथा सुन्दर, उप= समीप।

(c) ऊ+उ= ऊ (ू)

वधू+उदय= वधूदय

व्+अ+ध्+ऊ # उ+द्+अ+य्+अ

साधू+उदय= साधूदय। भू+उदय= भूदय

वधू+उत्सर्ग= वधूत्सर्ग। स्वयंभू+उदय= स्वयंभूदय

भू+उद्धार= भूद्धार। भू+उत्सर्ग= भूत्सर्ग

चमू+उत्तम= चमूत्तम। भू+ऊढ़= भूढ़

(d) ऊ+ऊ= ऊ (ू)

भू+ऊर्ध्वम्= भूर्ध्वम्

भ्+ऊ # ऊ+र्+ध्+व्+अ+म्

वधू+ऊर्ध्वम्= वधूर्ध्वम्। भू+ऊर्जा= भूर्जा

स्वयंभू+ऊहा= स्वयंभूहा। भू+ऊष्मा= भूष्मा

भू+ऊधर= भूधर। भू+ऊदर्घ= भूदर्घ

वधू+ऊहन= वधूहन

4. (a) ऋ+ऋ= ॠ (ॄ)

मातृ+ऋणम्= मातृणम्

म्+आ+त्+[ऋ#ऋ]+ण्+अ+म्

पितृ+ऋणम्= पितृणम्। दातृ+ऋण= दातृण

धातृ+ऋण= धातृण। कतृ+ऋण= कतृण

मातृ+ऋद्धि= मातृद्धि। भ्रातृ+ऋण= भ्रातृण

(नोट :- सन्धिगत शब्दमे तृ = दीर्घ तृ पढ़ब/लिखब)

5. लृ+लृ= ॡ

कलृ+लृकार= कलृकार

क्+अ+[लृ#लृ]+क्+आ+र्+अ

ह्रस्व लृ + ह्रस्व लृ = दीर्घ ॡ

अपवाद :- कुल+अटा= कुलटा (आ के बदलामे अ)

मार्त+अण्ड= मार्तण्ड

शक+अन्धु= शकन्धु।

कर्क+अन्धु= कर्कन्धु।

2. गुण सन्धि (ऐ, ओ, अर्)

संक्षेप सूत्र :- आदगुण:

व्याख्या : यदि अवर्ण (अ, आ) के बाद (+) इवर्ण (इ, ई) वा उवर्ण (उ, ऊ) अथवा ऋवर्ण (ऋ, ॠ) अबैत अछि; तखन दुनू मिलि कऽ क्रमश: (क) ए (ख) ओ तथा (ग) अर् भऽ जाइत अछि।

बनावट :

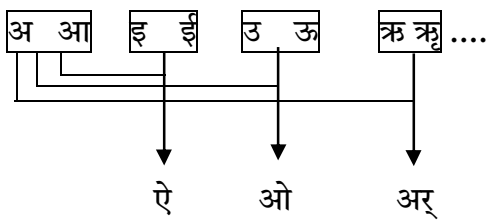

जेना- (1) अवर्ण+इवर्णक सन्धि :-

a. अ+इ= ए- (े)
b. आ+इ= ए- (े)
c. अ+ई= ए- (े)
d. आ+ई= ऐ- (ै)

(2) अवर्ण+उवर्णक सन्धि :-

a. अ+उ= ओ- (ो)
b. आ+उ= ओ- (ो)
c. अ+ऊ= ओ- (ो)
d. आ+ऊ= ओ- (ो)

(3) अवर्ण+ऋवर्णक सन्धि :-

a. अ+ऋ= अर्- अ र्= रेफ्

b. आ+ऋ= अर्- (अर्)

c. (C आ D पाठ्यक्रमसँ बाहर।)

अर्= अ र्= रेफ्, के अर्थ अछि जे, 'अ' पूर्वक अक्षरमे विलीन भऽ जाइत अछि आ सिर्फ रेफ् (र्= रेफ्) ऐगला अक्षरपर देखाइ दैत अछि।

*** (1) (a) अ+इ= ए (े)**

देव+इन्द्र= देवेन्द्र

द्+ए+व्+ अ#इ +न्+द्+र्+अ (अ + इ के सन्धि भेल)

सुर+इन्द्र= सुरेन्द्र। गज+इन्द्र= गजेन्द्र।

खग+इन्द्र= खगेन्द्र। जल+इन्द्र= जलेन्द्र।

अमर+इन्द्र= अमरेन्द्र। राज+इन्द्र= राजेन्द्र।

नर+इन्द्र= नरेन्द्र। जित+इन्द्रिय= जितेन्द्रिय।

उप+इन्द्र= उपेन्द्र। ज्ञान+इन्द्र= ज्ञानेन्द्र।

मृग+इन्द्र= मृगेन्द्र। नरकस्य+इदम्= नरकस्येदम्।

भूप+इन्द्र= भूपेन्द्र। अत्र+इदम्= अत्रेदम्।

देव+इति= देवेति। तव+इव= तवेव।

न+इति= नेति। ईश्वर+इच्छा= ईश्वरेच्छा।

स्व+इच्छा= स्वेच्छा। भारत+इन्दु= भारतेन्दु।

धर्म+इन्द्र= धर्मेन्द्र। कर्म+इन्द्रिया= कर्मेन्द्रिया।

(b) आ+इ= ए (े)

महा+इन्द्र= महेन्द्र

म्+अ+ह्+ आ#इ + न्+द्+र्+अ

(आ+इ के सन्धि भेल अछि।)

रमा+इन्द्र= रमेन्द्र। रमा+इति= रमेति

पिता+इति= पितेति। सखा+इति= सखेति

विद्या+इति= विद्येति। यथा+इति= यथेति

तथा+इति= तथेति। यथा+इदम्= यथेदम्

तथा+इदम्= तथेदम्। यथा+इष्ट= यथेष्ट

यथा+इच्छा= यथेच्छा। कला+इव= कलेव

(c) अ+ई= ए – (े)

गण+ईश= गणेश

ग्+अ+ण्+ अ#ई +श्+अ (अ+ई के सन्धि भेल अछि।)

सुरेश= सुर+ईश। दिनेश= दिन+ईश।

राजेश= राज+ईश। जलेश= जल+ईश।

नर+ईश= नरेश। देव+ईश= देवेश।

परम+ईश्वर= परमेश्वर। हित+ईश= हितेश।

देव+ईश्वर= देवेश्वर। राम+ईश्वर= रामेश्वर।

काम+ईश्वर= कामेश्वर। नाग+ईश्वर= नागेश्वर।

उप+ईक्षा= उपेक्षा। एक+ईश्वर= एकेश्वर।

(d) आ+ई= ए – (े)

महा+ईश= महेश

म्+अ+ह्+ आ#ई +श्+अ (आ+ई के सन्धि भेल अछि।)

रमा+ईश= रमेश। उमा+ईश= उमेश।

गंगा+ईश= गंगेश। गंगा+ईश्वर= गंगेश्वर।

महा+ईश्वर= महेश्वर। रमा+ईश्वर= रमेश्वर।

यथा+ईश्वर= यथेश्वर। तथा+ईश्वर= तथेश्वर।

राका+ईश= राकेश।

2. (a) अ+उ= ओ – (ो)

सूर्य+उदय= सूर्योदय

स्+ऊ+र्+य्+ अ#उ +द्+अ्+य्+अ (अ+उ के सन्धि भेल)

चन्द+उदय= चन्द्रोदय। सर्व+उदय= सर्वोदय।

नव+उदय= नवोदय। भाग्य+उदय= भाग्योदय।

सर्व+उत्तम= सर्वोत्तम। नगर+उपान्ते= नगरोपान्ते।

पुरुष+उत्तम= पुरुषोत्तम। नर+उत्तम= नरोत्तम।

सह+उदर= सहोदर। लम्ब+उदर= लम्बोदर।

एक+उदर= एकोदर। जल+उदर= जलोदर।

हित+उपदेश= हितोपदेश। मूल+उत्सव= मूलोत्सव।

नील+उत्पल= नीलोत्पल। परम+उदार= परमोदार।

पर+उपकार= परोपकार। चन्द्र+उज्जवल= चन्द्रोज्जवल।

प्र+उज्जवल= प्रोज्जवल। करभ+उरु= करभोरु।

वाम+उरु= वामोरु। हिम+उपम= हिमोपम।

जल+उढ़= जलोढ़। हिम+उदय= हिमोदय।

देव+उक्ति= देवोक्ति। अन्य+उक्ति= अन्योक्ति।

लोक+उक्ति= लोकोक्ति। आत्म+उत्सर्ग= आत्मोत्सर्ग।

ग्राम+उद्धार= ग्रामोद्धार। पद+उन्नति= पदोन्नति।

प्र+उन्नति= प्रोन्नति। पुत्र+उत्पति= पुत्रोत्पति।

प्र+उत्साहन= प्रोत्साहन।

(b) आ+उ= ओ – (ो)

महा+उदय= महोदय

म्+अ+ह्+ [आ#उ] +द्+अ्+य्+अ (आ+उ के सन्धि भेल अछि।)

गंगा+उदक= गंगोदक। महा+उत्सव= महोत्सव।

महा+उद्योग= महोद्योग। महा+उरु= महोरु।

महा+उदार= महोदार। महा+उत्पात= महोत्पात।

यथा+उचित= यथोचित। विद्या+उन्नति= विद्योन्नति।

महा+उपदेश = महोपदेश।

(c) अ+ऊ= ओ – (ो)

नव+ऊढ़ा= नवोढ़ा

न्+अ+व्+ [अ#ऊ] +ढ्+आ

एक+ऊन= एकोन (एक कम)।

तव+ऊर्मि= तवोर्मि। मम+ऊर्मि= ममोर्मि।

समुद्र+ऊर्मि= समुद्रोर्मि। चन्द्र+ऊर्मि= चन्द्रोर्मि।

देव+ऊर्मि= देवोर्मि। खल+ऊन= खलोन।

जल+ऊन= जलोन। जल+ऊढ़ = जलोढ़

(d) आ+ऊ= ओ – (ो)

महा+ऊर्मि= महोर्मि

म्+अ+ह्+ आ#ऊ +र्+म्+ई

गंगा+ऊर्मि= गंगोर्मि। गीता+ऊर्मि= गीतोर्मि।

लता+ऊर्मि= लतोर्मि। सीता+ऊर्मि= सीतोर्मि।

माता+ऊर्मि= मातोर्मि। महा+ऊरु= महोरु।

महा+ऊर्णा= महोर्णा। महा+ऊन= महोन।

पिता+ऊर्मि = पितोर्मि।

3. (a) अ+ऋ= अर् – (अ)र् (रेफ्)

देव+ऋषि= देवर्षि

द्+ए+व्+ अ#ऋ +ष्+इ

राज+ऋषि= राजर्षि। वेद+ऋषि= वेदर्षि।

योग+ऋषि= योगर्षि। ब्रह्म+ऋषि= ब्रह्मर्षि।

परम+ऋृषि= परमर्षि। सप्त+ऋषि= सप्तर्षि।

ग्रीष्म+ऋतु = ग्रीष्मर्तु।

हिम+ऋतु= हिमर्तु। वसन्त+ऋतु= वसन्तर्तु।

देव+ऋण= देवर्ण। अधम+ऋण= अधमर्ण (कर्जदार)

उत्तम+ऋण= उत्तमर्ण (कर्जदाता), परम+ऋत= परमर्त।

(b) आ+ऋ= अर् – (अ)र् (रेफ्)

महा+ऋषि= महर्षि

म्+अ+ह्+ आ#ऋ +ष्+इ

वर्षा+ऋतु= वर्षर्तु। देवता+ऋषभ= देवतर्षभ।

महा+ऋद्धि= महर्द्धि।

* अपवाद :- भय+ऋत= भयार्त।

(अर् के बदला आर्)

शीत+ऋत= शीतार्त। सुख+ऋत= सुखार्त।

अक्ष+ऊहिनी= अक्षौहिनी।

(ओ के बदला औ)

स्व+इर= स्वैर। स्व+इरी= स्वैरी। (ए के बदला ऐ)।

गुण सन्धि समाप्त।

❑

3. वृद्धि सन्धि (ऐ, औ)

*** संक्षेप सूत्र :-** वृद्धिरेचि

*** व्याख्या :-** यदि अवर्ण (अ, आ) के बाद (+) ए, ऐ अथवा ओ, औ अबैत अछि; तखन दुनू मिलि कऽ क्रमश: (1) ऐ तथा (2) औ भऽ जाइत अछि।

* बनावट :-

(1)

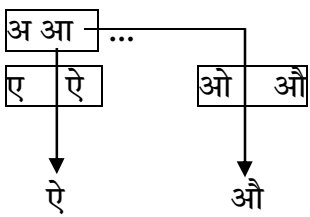

अर्थात्-

(1) a. अ+ए= ऐ- (ै)

b. आ+ए= ऐ- (ै)

c. अ+ऐ= ऐ- (ै)

d. आ+ऐ= ऐ- (ै)

(2) a. अ+ओ= औ- (ौ)

b. आ+ओ= औ- (ौ)

c. अ+औ= औ- (ौ)

d. आ+औ= औ- (ौ)

1. (a) अ+ए= ऐ- (ै)

अत्र+एव= अत्रैव

↓

अ+त्र्+[अ#ए]+व्+अ

तत्र+एव= तत्रैव। यत्र+एव= यत्रैव।

अथ+एक= अथैक। एक+एक= एकैक

कृष्ण+एकत्व= कृष्णैकत्व। अद्य+एव= अद्यैव।

मम+एतत्= ममैतत्। न+एनम्= नैनम्

पुत्र+एषणा= पुत्रैषणा।

अपवाद :- प्र+एजते= प्रेजते।

(ऐ के बदला ए)

(b) आ+ए= ऐ- (ै)

सदा+एव= सदैव

↓

स्+अ+द्+[आ # ए]+व्+अ

तदैव= तदा+एव। तथा+एव= तथैव। कदा+एव = कदैव

वसुधैव= वसुधा+एव। तथैक= तथा+एक।

सा+एषा= सैषा। बाला+एका= बालैका।

यथा+एका= यथैका। दृष्ट्वा+एव= दृष्ट्वैव।

गत्वा+एव= गत्वैव। यथा+एव= यथैव।

विद्या+एका= विद्यैका।

(c) अ+ऐ= ऐ – (ै)

मत+ऐक्य= मतैक्य

म्+अ+त्+ अ # ऐ +क्+य्+अ

विपुलैश्वर्य= विपुल+ऐश्वर्य

तव+ऐश्वर्य= तवैश्वर्य। परम+ऐश्वर्य= परमैश्वर्य।

नव+ऐश्वर्य= नवैश्वर्य। देव+ऐश्वर्य= देवैश्वर्य।

राम+ऐश्वर्य= रामैश्वर्य।

(d) आ+ऐ= ऐ – (ै)

महा+ऐश्वर्य= महैश्वर्य

म्+अ+ह्+ आ # ऐ +श्+व्+अ+र्+य्+अ

महा+एक्य= महैक्य। तथा+ऐक्य= तथैक्य।

तथा+ऐश्वर्य= तथैश्वर्य। यथा+ऐश्वर्य= यथैश्वर्य।

विद्या+ऐश्वर्य= विद्यैश्वर्य। सखा+ऐश्वर्य= सखैश्वर्य।

पिता+ऐश्वर्य= पितैश्वर्य। सदा+ऐक्य= सदैक्य।

2. (a) अ+ओ= औ – (ौ)

दिव+ओकस= दिवौकस

द्+इ+व्+ अ # ओ +क्+अ+स्+अ

जलौध= जल+ओध

मेध+ओध= मेधौध। तव+ओज= तवौज।

ग्राम+ओक= ग्रामौक। धन+ओध= धनौध

मन+ओज= ममौज। वन+ओक= वनौक।

तव+ओष्ठ= तवौष्ठ। परम+ओजस्वी= परमौजस्वी।

अपवाद :- प्र+ओषति= प्रोषति (औ के बदला ओ)

उप+ओषति= उपोषति (औ के बदला ओ)

(b) आ+ओ= औ – (ौ)

महा+ओज= महौज

म्+अ+ह्+[आ # ओ]+ज्+अ

गंगा+ओध= गंगौध

गीता+ओध= गीतौध। विद्या+ओध= विद्यौध।

महा+ओजस्वी= महौजस्वी। माता+ओष्ठ= मातौष्ठ।

गीता+ओजस= गीतौजस। महा+ओजस= महौजस।

पिता+ओजस= पितौजस।

(c) अ+औ= औ – (ौ)

रोग+औषध= रोगौषध

र्+ओ+ग्+[अ # औ]+ष्+अ+ध्+अ

हृदयौदार्य= हृदय+औदार्य। तवौदार्य= तव+औदार्य।

ममौदार्य= मम+औदार्य। चितौदार्य= चित+औदार्य।

गुणौदार्य= गुण+औदार्य। परमौषध= परम+औषध।

तस्यौषध= तस्य+औषध। दिव्यौषध= दिव्य+औषध।

गृहौत्सुक्य= गृह+औत्सुक्य। रोगौषधि= रोग+औषधि।

अनौपचारिक= अन+औपचारिक।

(d) आ+औ= औ – (ौ)

महा+औषध= महौषध

म्+अ+ह्+[आ # औ]+ष्+अ+ध्+अ

महा+औषधि= महौषधि

महा+औदार्य= महौदार्य। सदा+औदार्य= सदौदार्य।

यथा+औदार्य= यथौदार्य। तथा+औदार्य= तथौदार्य।

यथा+औषधि= यथौषधि। तथा+औषधि= तथौषधि।

सदा+औत्सुक्य= सदौत्सुक्य। माता+औषधि= मातौषधि।

4. यण् सन्धि-

भूमिका :- यण् सन्धि व्याकरणक प्राण कहल गेल अछि। वस्तुत: ई अन्त:स्थ वर्णसँ सम्बन्ध रखैत अछि। अन्त:स्थ वर्णकेँ विकल्पसँ अर्धस्वर वर्ण कहल जाइत अछि। पूर्वक अध्यायमे विस्तारसँ बतौल गेल अछि। आब किछु एकर निगम, निष्कर्षण आ फेर स्वरक ग्रहण या अवशोषणक सम्बन्धमे जानि ली।

* निगम :- कोनो शब्दक अन्तिम अक्षरसँ स्वर इ, ई, उ, ऊ, ऋ आ लृ के निकैल कऽ अलग हेबाक क्रियाकेँ निगम कहल जाइत अछि। **जेना-**

* इति+.....। प्रति+.....। नदी+.....। सुधी+.....।
  ↓ इ ↓ इ ↓ ई ↓ ई

* सु+.....। अनु+.....। वधू+.....
  ↓ उ ↓ उ ↓ ऊ

* मातृ+.....। पितृ+.....। धातृ+.....
  ↓ ऋ ↓ ऋ ↓ ऋ

* लृ+.....।
  → ल्

*** निष्कर्षण :-** निगमित वर्णक रूपमे परिवर्त्तनकेँ निष्कर्षण कहल जाइत अछि। पूर्वमे ज्ञात अछि जे इ, उ, ऋ, या लृ के रूप परिवर्त्तन क्रमश: य्, व्, र् तथा ल् होइत अछि।

जेना-

* इति+...	प्रति+...	नदी+...	सुधी+...
↓	↓	↓	↓
इ→य्	इ→य्	ई→य्	ई→य्
* सु+...	अनु+...	वधू+...	मातृ+...
↓	↓	↓	↓
उ→व्	उ→व्	ऊ→व्	ऋ→र्

↓ 0→

*** ग्रहण** :- निष्कर्षित वर्ण द्वारा पुन: + के आगाँसँ स्वरक अवशोषण क्रिया ग्रहण कहबैत अछि। **जेना-**

* इति + आदि = इत्यादि
↓
इ→य्

* 'ति' सँ 'इ' के निगम भेलासँ 'त्'

* संकेत चिह्न :-

(1) निगम ↓

(2) निष्कर्षण →

(3) ग्रहण ↙

(4) सन्धि चक्र या क्रिया →

जेना- *प्रति + एक प्रत्येक
↓
ई– ये्

इ के– य् तथा ए के ग्रहणसँ 'ये' बनल अछि।

* नदी + आदि नद्यादि
↓
ई– य्

* सुधी + उपास्य — सुध्युपास्य

ई ▸ य्

* सु + आगत — स्वागत

उ ▸ व्

* वधू + आगम — वध्वागम

ऊ ▸ व्

* मातृ + आज्ञा — मात्राज्ञा

ऋ ▸ र् (ऋ ▸ र्+आज्ञा)

(त्+र = त्र)

लृ+अ= ल

▸ ल्

* लृ सँ विकार नहि निकलैत अछि। ई स्वयं ल् भऽ जाइत अछि।

गणितीय विधि :-

* इति+आदि = ... ?

हल : इति+आदि

↓

इ+त्+इ # आ+द्+इ

↓

इ+त्+य्+ आ + ि्द्+इ {:· इ=य् }

= इत्यादि।

* सु+आगत

↓

स्+ उ # आ + ग् + अ + त् + अ

↓

स्+ व् + आ + ग् + अ + त् + अ (:· उ = व्)

= स्वागत

ऐ प्रकारे सभ सम्बन्धित प्रश्नक समाधान करबाक चाही।

❑

4. यण सन्धि

* सूत्र- इकोयणचि

इ+क्+ ओ + य्+अ+ण्+अ+च्+इ

* प्रत्याहार :-

(1) इक् = इ, उ, ऋ, लृ

(2) यण् = य, व, र, ल

(3) अच् = सब स्वर वर्ण

* व्याख्या : यदि इ, उ, ऋ वा लृ के बाद (+) अपनासँ कोनो भिन्न स्वर अबैत अछि; तखन (a) इ के य् (b) उ के व् (c) ऋ के र् तथा (d) लृ के ल् भऽ जाइत अछि।

* ई सूत्र, ई, ऊ, ॠ तथा ॡ के संग सेहो सम्बद्ध अछि अर्थात् ई= य्, ऊ= व्, ॠ= र् तथा ॡ = ल्।

* ध्यातव्य :- ॠ आ ॡ के प्रयोग मैथिलीमे नहि भऽ केवल संस्कृतमे देखाइ पड़ैत अछि।

(1) इ/ई के य् भऽ जाएब।

आब किछु उदाहरणपर दृष्टिपात करी :-

* अति+ अल्प = अत्यल्प

इ → य्

* इति+उवाच = इत्युवाच

सिद्धि :-

..... इति + उवाच = ... ?

इ+त्+ इ # उ + व्+आ+च्+अ

↓

इ+त्+ य् + उ + व्+आ+च्+अ

= इत्युवाच

वि+अर्थ = व्यर्थ

↓

इ → य्

*** सन्धिसँ विच्छेदक नियम :-**

यदि कोनो भी संयुक्ताक्षर अर्थात् आधा अक्षर (हल् वर्ण) के बाद शब्दमे 'य' अबैत अछि; तँ बुझबाक चाही जे ओइ अदहा अक्षरमे पहिने अर्थात् विच्छेद करबामे 'इ' (ि) या ई (ी) के मात्रा होएत तथा 'य'मे प्रयुक्त मात्रा + के आगाँसँ शुरू होएत। **जेना-**

अत्याचार = ... + ... ?

* ऐठाम 'त्' के बाद 'य' अछि अत: 'त्' मे इ (ि) के मात्रा लगा 'य' मे प्रयुक्त मात्रा आ + के आगाँसँ शुरू होएत।

अर्थात् (क) <u>अत्याचार</u> = ?

↓

अ+ त् +य्+आ+ च्+ आ+ र्+ अ

↓

अ+ित् +इ + आ+ च्+ आ+ र्+ अ

<u>अति+आचार</u>

(ख) अति+आचार = ... ?

↓

अ+त्+इ # आ+ च्+ आ+ र्+ अ

↓

अ+त्+य् +आ+ चा+र = अत्याचार।

* ऐ प्रकारे विच्देदसँ सन्धि आ सन्धिसँ विच्छेद करबाक चाही।

उदाहरण : यदि+अपि = यद्यपि

दधि+ओदन = दध्योदन

अत्यावश्यक= अति+आवश्यक

मति+आदि = मत्यादि। सती+आदि = सत्यादि।

नदी+आदि = नद्यादि। अभि+आगत = अभ्यागत।

अभि+उक्ति = अभ्युक्ति। अभि+आस = अभ्यास।

वि+आस = व्यास

इ—य्

नि+आस = न्यास

ई→य्

वि+ओम = व्योम। वि+आज = व्याज।

अति+उच्च = अत्युच्च। अति+अधिक = अत्यधिक।

वि+आकरण = व्याकरण। वि+आकुल = व्याकुल।

नी+ऊन = न्यून। परि+अटन = पर्यटन।

सुधी+ऐश्वर्यम् = सुध्यैश्वर्यम्। इति+ऊन = इत्यून।

देवी+अर्चा = देव्यर्चा। प्रति+ऊह = प्रत्यूह।

प्रति+आहार = प्रत्याहार। अधि+आहार = अध्याहार।

अधि+अक्ष = अध्यक्ष। अति+आधुनिक = अत्याधुनिक।

अति+उदास = अत्युदास। प्रति+अंग = प्रत्यंग।

प्रति+आशा = प्रत्याशा। प्रति+अय = प्रत्यय।

प्रति+आभा = प्रत्याभा। स्त्री+ऊढ़ा = स्त्र्यूढ़ा।

प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष। अति+उत्तम= अत्युत्तम।

इति+आलोच्य= इत्यालोच्य। सखी+आगच्छ= सख्यागच्छ।

दधि+अत्र= दध्यत्र। वाणी+एका= वाण्येका।

अभि+उदय= अभ्युदय। इति+उक्त्वा= इत्युक्त्वा ।

प्रति+अनुसार= प्रत्यनुसार। गोपी+एषा= गोप्येषा।

गति+अर्थक= गत्यर्थक। वि+आख्या= व्याख्या।

वि+आहुति= व्याहुति। वि+अक्त= व्यक्त।

वि+अतीत = व्यतीत। वि+उत्पति= व्युत्पति।

वि+अय = व्यय। वि+आप्त= व्याप्त।

अति+उक्ति= अत्युक्ति। वाणी+औचित्य= वाण्यौचित्य।

सवित्री+उदय= सवित्र्युदय। प्रति+उपकार= प्रत्युपकार।

प्रति+उत्तर= प्रत्युत्तर। प्रति+उत्पन्न= प्रत्युत्पन्न।

अधि+आय= अध्याय। अधि+अयण= अध्ययण।

अभि+अस्त= अभ्यस्त। उपरि+उक्त= उपर्युक्त।

परि+आवरण= पर्यावरण। सखी+उचित= सख्युचित।

देवी+ऐश्वर्य= देव्यैश्वर्य। अति+ऊष्म= अत्यूष्म।

आदि+अन्त= आद्यन्त।

कि+आ = क्या, की+आ = क्या।

↓ ↓

इ—य् ई—य्

* अध्ययण = ... + ... + ...

↓

= अधि+~~इङ्~~+अयण

= अधी+अयण

ई→य्

= अध्ययण (इङ्= पढ़नाइ)

* अधि+इङ+आत्म+ठक् (इक)

= अधी + आत्म + ठक् (इक)

ई → य्

= अध्यात्म + ठक् (इक)

= आध्यात्मिक

(प्रत्यय जुड़लासँ आदि वर्ण अ के आ)

* आब उ, ऊ के व् पर विचार करी।

(2) उ/ऊ के व् भऽ जाएब।

सु+आगतम्= स्वागतम्

उ—व्

अन्वय= अनु+अय

* सन्धिसँ विच्छेद :- यदि आधा अक्षर यानी हल् वर्ण के बाद 'व' अबैत अछि; तखन हल वर्णमे 'उ' (ु' या 'ऊ' (ू) के मात्रा तथा 'व' के प्रयुक्त मात्रा+के आगाँ राखि विच्छेद पुरा करी। **जेना-**

स्वल्प = सु+अल्प

स्वर्ग = सु+अर्ग

स्+व+ल्प

उ + अ

स् ु

अल्प

मधु+अरि= मध्वरि। (मधु- शराब)

मधू+अरि= मध्वरि (शहद)। मधु+आलय= मध्वालय।

मधु+ऋृते= मध्वृते। वस्तु+अत्र= वस्त्वत्र।

तनु+ईश्वर= तन्वीश्वर। भानु+इति= भान्विति।

गुरु+ओदन= गुर्वोदन। सरयु+अम्बु= सरय्वम्बु।

अनु+एषण= अन्वेषण। ऋतु+इक= ऋत्विक।

वधू+अंग= वध्वंग। वधू+ओजस= वध्वोजस।

वधू+आलय= वध्वालय। प्रभु+आगच्छ= प्रम्वागच्छ।

प्रभु+एहि= प्रभ्वेहि। लघु+अर्थ= लध्वर्थ।

मधु+अत्र= मध्वत्र। साधु+इदम्= साध्विदम्।

सु+अच्छ= स्वच्छ। अनु+इत= अन्वित।

मनु+अन्तर= मन्वन्तर। सु+औषधि= स्वौषधि।

गुर्वौदार्य—गुर्-वौदार्य= गुरु+औदार्य।

पश्वधम= पशु+अधम। तनु+अंगी = तन्वंगी।

समन्वय

↓

सम्+अनु+अय

* इ + अ = य	इ + ऐ = यै	ई + अ = य
इ + आ = या	इ + ओ = यो	ई + आ = या
इ + उ = यु	इ + औ = यौ	ई + उ = यु
इ + ऊ = यू	इ + अं = यं	ई + उ = यू
इ + ए = ये	इ + अः = यः	ई + ए = ये

* उ+अ= व	उ+आ= वा	उ+इ= वि
उ+ई= वी	उ+ए= वे	उ+ऐ= वै
उ+ओ= वो	उ+औ= वौ	उ+अं= वं
उ+अः= वः।		
* ऊ+अ= व	ऊ+आ= वा	ऊ+इ= वि
ऊ+ई= वी	... .	... .

* लृ+अ= ल	लृ+आ= ला	लृ+इ= लि
लृ+ई= ली	लृ+उ= लु	लृ+ऊ = लू
... ...	... ...	... ...
* ऋ+अ= र	ऋ+आ= रा	ऋ+इ= रि
ऋ+ई= री	ऋ+उ= रु	ऋ+ऊ= रू
... ...	... ...	... ...

*** (3) ऋ के र् भऽ जाएब।**

मातृ+आज्ञा = मात्-राज्ञा = मात्राज्ञा (:· त्+र= त्र)

ऋ—र्

पितृ+आज्ञा= पित्राज्ञा। दातृ+आदेश= दात्रादेश।

भ्रातृ+आज्ञा= भ्रात्राज्ञा। दातृ+आदेश= दात्रादेश।

मातृ+आनन्द= मात्रानन्द। पितृ+आदेश= पित्रादेश।

नेतृ+ आगम= नेत्रागम।

* पितृ + अर्थम् = पित्-रर्थम् = पित्रर्थम् (:· त्+र= त्र)

ऋ→र् उत्तर - 1

* पितृ + अर्थम्

वाँया पक्ष ऋ→ र्

= पित्-र्

= पित्र + अर्थम् (त् + र् = त्र)

= पित्रार्थम्। (चूकि : अ+अ = आ) उत्तर - 2

प्रश्न : तृ = ... ?

हल :-

तृ
↓
ऋ→र्

= त्+र् = त्र

*** निष्कर्ष :** ऋकारान्त शब्दक आगाँ दीर्घ स्वर (आ) रहलापर एकेटा उत्तर दीर्घ (आ) जनित होइत अछि; परञ्च आगाँ अर्थात्+ के बाद ह्रस्व स्वर (अ) रहलासँ ओकर दूटा उत्तर प्राप्त होइत अछि। **जेना-**

मातृ + अर्थम् = मात्रर्थम् / मात्रार्थम्

धातृ + अंश = धात्रंश / धात्रांश

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति/पित्रानुमति

दातृ + अनुमति = दात्रनुमति/दात्रानुमति

दातृ + अर्थ = दात्रर्थ / दात्रार्थ

नेतृ + अर्थ = नेत्रर्थ / नेत्रार्थ

(4) लृ के ल् भऽ जेनाइ :-

लृ+आकृति = लाकृति। कलृ+अयगु= कलयुग।
↳ल्

कलृ+आकृति= कलाकृति = कला+आकृति।

(आ+आ= आ सँ)

❑

(5) अयादि सन्धि

सूत्र :- एचोऽयवायाव:

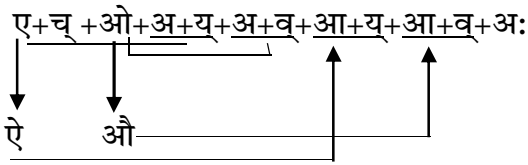

*** व्याख्या :-** यदि ए, ऐ या ओ, औ के बाद अपनासँ कोनो भिन्न स्वर अबैत अछि; तँ (1) 'ए' के 'अय्' (2) 'ऐ' के 'आय् (3) 'ओ' के 'अव्' तथा (4) 'औ' के 'आव्' भऽ जाइत अछि। **जेना-**

(1) ए ⟷ अय्

प्रश्न : ने+अनम् = ... ?

हल : ने+ अनम्

= न् + ए + अनम्

= न्+ अय् + अनम्

=नयनम्

ने+अन = नयन

प्रश्न : नयन= ... + ... ?

हल : नयन

= न् + अ + य् + अ + न् + अ

= न्+ अय् + अन

= न् + ए + अन = ने + अन।

* ऐ प्रकारे सन्धिसँ विच्छेद तथा विच्छेदसँ सन्धि के हल करबाक चाही।

चे+अन= चयन।

शे+अन= शयन।

ए+अन= अयन।

(2) ऐ ↔ आय् भऽ जेनाइ :-

प्रश्न : नै+अक = ... ?

= न्+ऐ+अक

= न्+आय्+अक

= नायक

प्रश्न: नायक=... + ... ?

हल : नायक

= न्+आ+य्+अ+क्+अ

= न्+आय्+अक=

= न्+ऐ+अक

= नै+अक

ऐ प्रकारे- गै+अक= गायक। शै+अक= शायक।

चै+अक= चायक। लै+अक= लायक। पै+अक= पायक।

वि+नै+अक= विनायक। गै+अन= गायन।

शै+अन= शायन।

(3) ओ ↔ अव् भऽ जेनाइ :-

प्रश्न : पो+अन = ... ? हल : पो+अन

= प्+ओ+अन

↓

= प्+अव्+अन

= पवन

प्रश्न: पवन=... + ... ?

हल : पवन

↓

= प्+अ+व्+अ+न्+अ

= प् + अव्+ अन

↓

= प् + ओ+ अन

= पो + अन

ऐ प्रकारे- भो+अन= भवन। हो+अन= हवण। यो+अन= यवन।

पो+इत्र= पवित्र। गो+यम्= गव्यम्। गो+युति= गव्युति।

गो+ईश= गवीश।

(4) औ ↔ आव् भऽ जेनाइ :-

प्रश्न : पौ+अक = ... ?

हल : पौ+अक

↓

= प्+औ+अक

↓

= प्+आव्+अक

= पावक

प्रश्न: धावक=... + ... ?

हल : धावक

= घ्+आ+व्+अ+क्+अ

= ध् + आव् + अक

= ध् + औ + अक

= धौ + अक

ऐ प्रकारे- भौ+उक= भावुक। नौ+इक= नाविक।

भौ+अनम्= भावनम्। पौ+अन= पावन।

रौ+अन= रावण। वर्षौ+इह= वर्षाविह।

विद्यौ+उदिते= विद्यावुदिते। नौ+यम्= नाव्यम्।

भौ+यम्= भाव्यम्। तौ+ईश्वरौ= तावीश्वरौ।

द्वौ+एव= द्वावेव। रात्रौ + अस्ताचल = रात्रावस्ताचल।

❑

6. पूर्वरूप सन्धि-

* सूत्र :- एङ् पदान्तादति

* व्याख्या : (1) यदि 'ए' या 'ओ' के बाद (+) 'अ' अबैत अछि; तँ 'अ' के लोप भऽ कऽ खण्डाकार 'ऽ' भऽ जाइत अछि।

* आकार- अंग्रेजी अक्षर 'एस' के समान।

* उच्चारण- अदहा 'अ' के समान।

* विकल्प- अ = ऽ तथा आ = ऽऽ

* नाम- पूर्वरूप, खण्डाकार, अवग्रह चिह्न

(2) दीर्घ रहलापर विकल्पसँ होइत अछि।

(1) जेना- ऋते+अपि= ऋतेऽपि। नमस्ते+अस्तु= नमस्तेऽस्तु।

शिवे+अपि= शिवेऽपि। सखे+अर्पय= सखेऽर्पय।

जले+अस्मिन्= जलेऽस्मिन्। रामे+अपि= रामेऽपि।

लाभे+अपि= लाभेऽपि। पाठे+अपठाम= पाठेऽपठाम।

सर्वे+अत्र= सर्वेऽत्र। ते+अवदन्= तेऽवदन्।

बालको+अवदत्= बालकोऽवदत्। प्रभो+अत्र= प्रभोऽत्र।

गुरो+अपि= गुरोऽपि। बिष्णो+अत्र= बिष्णोऽत्र।

पान्थो+अवदत्=पान्थोऽवदत्। लोको+अवदत्= लोकोऽवदत्।

कालो+अस्मि= कालोऽस्मि।

(2) तथा+आचार्यम्= तथाचार्यम् – x (गलत)

सही = तथाऽऽचार्यम् (* आ के लेल दूटा खण्डाकार)

इज्या+अध्ययण= इज्याऽध्ययण।

निष्क्रियता+आलस्यम्= निष्क्रियताऽऽलस्यम्।

* किछु मूलभूत प्रश्न : जे पुछल गेल अछि।

प्रश्न : 'ई' कोन दू वर्णक मेलसँ बनल अछि?

उत्तर : 'इ+इ' के मेलसँ 'ई' बनैत अछि।

प्रश्न : 'अ+आ' के मेलसँ कोन वर्ण बनत?

उत्तर : 'अ+आ' के मेलसँ 'आ' बनत।

ऐ प्रकारे जतेक बनावट पूर्वमे पढ़ल गेल, तइमे सँ कोनो पुछल जा सकैए। **जेना-**

अ+इ = ए। अ+ए= ऐ। उ+अ= व। ओ+इ= अवि।

औ+अ= आव। ए+अ= अय। ऐ+अ= आय। ओ+अ= अव।

अ+ऐ= ऐ। ऐ+उ= आयु।

उपरोक्त सभ प्रश्न पुछल गेल अछि।

एकटा प्रारूप :-

प्रश्न : ओ+इ के मेलसँ नया शब्द कोन बनत। एक उदाहरणक संग लिखू?

उत्तर : ओ+इ के मेलसँ 'अवि' बनत।

उदाहरण-

पो+इत्र

= प् + ओ + इत्र

↓

= प् + अव् + इत्र

= पवित्र

प्रश्न : इ+आ = ... ?

उत्तर : इ+आ= या

उदाहरण : इति+आदि = इत्यादि।

प्रश्न : ई+अ = ... ? उदाहरण : दिअ।

उत्तर : ई+अ = य।

उदाहरण : नदी+अम्बु= नद्यम्बु।

प्रश्न : उ+अ= ... ? उदाहरण दिअ।

उत्तर : उ+अ= व।

उदाहरण : अनु+अय = अन्वय।

ऐ प्रकारे-

प्रश्न : उ+आ = ... ? सोदाहरण लिखू।

उत्तर : उ+आ = वा।

उदाहरण : सु+आगत= स्वागत।

ऐ प्रकारे बनावटसँ सम्बन्धित प्रश्न घुमा-फिरा कऽ पुछल जाइत अछि।

* एकटा प्रश्न जे कोन-कोन वर्णक सन्धि भेल अछि। **जेना-**

प्रश्न : 'कवीन्द्र' मे कोन-कोन वर्णक सन्धि भेल अछि?

उत्तर आसानीसँ खोजि कऽ दऽ सकै छी। **जेना-**

कवीन्द्र = कवि+इन्द्र

क्+अ+व्+[इ # इ]+न्+द्+र्+अ

अर्थात् 'कवीन्द्र'मे [इ+इ] के सन्धि भेल अछि।

प्रश्न : 'अन्वय' मे कोन-कोन वर्णक सन्धि भेल अछि?

अन्वय= अनु+अय

अ+न्+[उ # अ]+य्+अ

उत्तर : 'अन्वय' मे 'उ+अ' के सन्धि भेल अछि।

ऐ प्रकारे वर्ण विश्लेषण कऽ # के आगाँ-पाछाँ वर्ण द्वारा उत्तर लिखि सकै छी। सु+अर्ग= स्वर्ग (उ+अ)

स्+ उ # अ +र्+ग्+अ

❑

2. व्यञ्जन सन्धि

शर्त : (1) हल् + स्वर = व्यंजन सन्धि/हल् सन्धि

(2) हल् + हल् = व्यंजन सन्धि/हल् सन्धि

(3) स्वर + हल् = व्यंजन (हल्) सन्धि

नोट : व्यंजनकेँ संस्कृतमे हल् कहल जाइत अछि। (हल् माने हलन्त)

1. झलां जशोऽन्ते :- यदि कोनो भी वर्गक प्रथम वर्णक बाद (+), वर्गक तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण अबैत अछि या कोनो अन्त:स्थ वर्ण (य, र, ल, व) रहए अथवा कोनो स्वर वर्ण आबए; तखन प्रथम वर्णक तृतीय वर्ण भऽ जाइत अछि।

*** प्रथम+तृतीय = तृतीय. तृतीय**

जेना- सत्+गुरु = सद्गुरु।

स्+अ+[त् # ग्]+उ+र्+उ

सत्+ग्रन्थ = सद्ग्रन्थ।

वाक्+दत= वाग्दत। पृथक्+ग्रीव = पृथग्ग्रीव।

वाक्+जालम्= वाग्जालम्। जगत्+बन्धु= जगद्बन्धु।

षट्+दर्शन= षड्दर्शन। अब्ज = अप्+ज

उत्+दाम = उद्दाम। | सत्+गति=

उत्+गम= उद्गम। | = सद्गति।

श्री मत्+ बाल्मीकि= श्रीमद्बाल्मीकि

भगवत्+गीता = भगवद्गीता।

उत्+गार = उद्गार। दिक्+दर्शन= दिग्दर्शन।

* प्रथम वर्ण+चतुर्थ = तृतीय चतुर्थ

तत्+भव = तद्भव

उद्भव = उत्+भव

दिक्+भ्रम = दिग्भ्रम। तद्+भ्रम = तद्भ्रम।

सत्+भाव = सद्भाव। सत्+धर्म = सद्धर्म।

उत्+भिज = उद्भिज। उत्+घाटन = उद्घाटन।

भगवत्+भक्ति = भगवद्भक्ति। उत्+धृतम् = उद्धृतम्।

उत्+घोष = उद्घोष। धनात्+धर्म = धनाद्धर्म।

वाक्+भूषण = वाग्भूषण।

श्री मत्+भगवत्+गीता = श्रीमद्भगवद्गीता।

* प्रथम+पञ्चम वर्ण=	तृतीय.पञ्चम/	पञ्चम/पञ्चम (अन्य सूत्र)
वाक्+मय =	**वाग्मय/**	**वाङ्मय**
महत्+नाम =	महद्नाम	महन्नाम
षट्+मुख=	षड्मुख	षण्मुख
सत्+मित्र=	सद्मित्र	सन्मित्र
दिक्+नाग=	दिग्नाग	दिङ्नाग
सत्+मति=	सद्मति	सन्मति/सम्मति
षट्+मार्ग=	षड्मार्ग	षण्मार्ग
जगत्+नाथ=	जगद्नाथ	जगन्नाथ

उत्+नति=	उद्नति	उन्नति
उत्+माद=	उद्माद	उन्माद
उत्+मूलित=	उद्मूलित	उन्मूलित
पराक्+मुख=	पराग्मुख	पराङ्मुख
प्राक्+मुख=	प्राग्मुख	प्राङ्मुख
उत्+नत=	उद्नत	उन्नत
सत्+मार्ग=	सद्मार्ग	सन्मार्ग
उत्+नयन=	उद्नयन	उन्नयन
षट्+मास=	षड्मास	षण्मास
अप्+मय=	अब्मय	अम्मय
मृत्+मय =	मृद्मय	मृण्मय
चित्+मय =	चिद्मय	चिन्मय

श्री मत्+ भागवत् + महापुराण = श्री मद्भागवद्महापुराण

* य :- संस्मित्+युवसे = संस्मिद्युवसे

उत्+यान = उद्यान

उत्+योग = उद्योग

उत्+यम = उद्यम

* र :- तत् + रूप = तद्रूप। तत्+रक्ष = तद्रक्ष।

षट्+रिपु = षड्रिपु । वाक्+रोध = वाग्रोध

श्री मत्+ रामचरित = श्री मद् रामचरित

जयत्+ रथ = जयद्रथ

* ल :- सत्+लाप = सद्लाप

उत्+लेख = उद्लेख/उल्लेख (अन्य सूत्रसँ)

उत+लिखित= उद्लिखित।

उल्लिखित (अन्य सूत्रसँ)

मत्+लोभ= मद्लोभ। जगत्+लीला= जगद्लीला।

शरत्+लीला = शरद्लीला। उत्+लंघन= उद्लंघन।

उल्लंघन (अन्य सूत्रसँ)

* व :- सत्+वाणी= सद्वाणी। तत्+व्रत= तद्व्रत।

तत्+वने= तद्वने। सत्+व्रतम्= सद्व्रतम्।

सत्+व्यवहार= सद्व्यवहार।

* स्वर :- जगत्+अम्बा = जगदम्बा। जगत्+ईश = जगदीश।

दिक्+अम्बर = दिगम्बर। वाक्+ईश = वागीश।

अच्+अन्त = अजन्त। सुप्+अन्त = सुबन्त।

कृत्+अन्त = कृदन्त। सत्+आचार = सदाचार।

सत्+उक्ति = सदुक्ति। सत्+उपदेश = सदुपदेश।

षट्+आनन = षडानन। प्राक्+एव = प्रागेव।

दुरात्+एव= दुरादेव। वाक्+आडम्बर=वागाडम्बर।उत्+एति= उदेति।

उत्+अय = उदय। पाश्चात्+अस्तंगते= पश्चादस्तंगते।

अप्+इन्धन = अबिन्धन। तत्+आकार = तदाकार।

तत्+अनुरूप= तदनुरूप। तत्+इच्छा= तदिच्छा।

सत्+इच्छा=सदिच्छा। जगत्+आनन्द= जगदानन्द।

2. सूत्र- समः सुटि :-

यदि सम् के बाद (+) कृ धातुसँ बनल कोनो शब्द अबैत अछि; तँ 'म्' के अनुस्वार (ं) आ 'स्' के आगम भऽ जाइत अछि। **जेना-**

सम्+कृत = संस्कृत। सम्+कार = संस्कार।

सम्+कर्त्ता = संस्कर्त्ता। सम् + कृति = संस्कृति।

सम्+करणम् = संस्करणम्। साम्+कृतिक= सांस्कृतिक।

3. मोऽनुस्वार: :-

यदि 'म्' या 'सम्' के बाद कोनो अन्त:स्थ वर्ण (य, र, ल, व) अथवा ऊष्ण वर्ण (श, ष, स, ह) अबैत अछि; तँ 'म्' के (अनुस्वार ं) भऽ जाइत अछि।

*** य-**

जेना- सम्+योग= संयोग। सम्+यम= संयम।

स्+अ+[म् # य्]+ओ+ग्+अ

सम्+युक्त= संयुक्त। सम्+योजक= संयोजक।

सम्+याचना= संयाचना।

*** र-**

* सम्+रत =संरत। सम्+रक्षक= संरक्षक।

सम्+रक्षित = संरक्षित। सम्+रेख= संरेख।

*** ल-**

सम्+लाप= संलाप। सम्+लग्न= संलग्न।

किम्+लोक= किंलोक। किम्+लोभ= किंलोभ।

*** व-**

सम्+वाद= संवाद। सम्+व्यवहार= संव्यवहार।

स्वयम्+वर= स्वयंवर। किम्+वा= किंवा।

सम्+वाणी= संवाणी। सम्+वाहक= संवाहक।

सम्+विधान= संविधान।

*** श-**

सम्+शय= संशय। सम्+शुद्धि= संशुद्धि।

सम्+शुर= संशुर। सम्+शोधन= संशोधन।

सम्+श्राध= संश्राध। विम्+शति= विंशति।

सम्+शक्ति= संशक्ति।

*** ष-**

सम्+षटकोण= संषटकोण।

सम्+षडानन= संषडानन।

*** स-**

सम्+सार= संसार। सम्+सुर= संसुर।

सम्+सहित= संसहित। सम्+साहित्य= संसाहित्य।

सम्+सुख= संसुख। सम् + सर्ग = संसर्ग

*** ह-**

सम्+हार= संहार। सम्+हिता= संहिता।

सम्+हुताश= संहुताश। सम्+हेतु= संहेतु।

सम्+हन्ता= संहन्ता।

4. वा पदान्तस्य :-

यदि म् या सम् के बाद (+) कोनो स्पर्श वर्ण (क सँ लऽ कऽ म धरिक) अबैत अछि; तखन 'म्' के अनुस्वार (ं) या बादबला वर्णक पञ्चम वर्ण भऽ जाइत अछि। **जेना-**

*** कवर्ग :**

अहम्+कार= अहंकार/अहङ्कार।

अ+ह्+अ+ म् # क् +आ+र्+अ

किम्+चित्= किंचित्/किञ्चित्

कथम्+चित्= कथंचित्/कथञ्चित्

सम्+कुल= संकुल/सङ्कुल। सम्+गम= संगम/सङ्गम

गम्+गा= गंगा/गङ्गा। सम्+गोष्ठी= संगोष्ठी/सङ्गोष्ठी।

सम्+कर= संकर/सङ्कर। सम्+कर्षण= संकर्षण/सङ्कर्षण।

सम्+कोच= संकोच/सङ्कोच। शंकर = शम्+कर (शिव)

अलम्+कार= अलंकार/अलङ्कार। सम्+घर्ष= संघर्ष/सङ्घर्ष।

*** चवर्ग :**

सम्+चय= संचय/सञ्चय। सम्+चार = संचार/सञ्चार।

पम्+चम= पंचम/पञ्चम। व्यम्+जन= वयंजन/व्यञ्जन।

सम्+जीव= संजीव/सञ्जीव। सम्+जय = संजय/सञ्जय।

*** टवर्ग :**

खम्+ड= खंड/खण्ड। खम्+डित= खडित/खण्डित।

किम्+ठग= किंठग/किण्ठग। खाम्+डव= खांडव/खाण्डव।

भाम्+ड= भांड/भाण्ड।

*** तवर्ग :**

परम्+तु= परंतु/परन्तु। सम्+तोष= संतोष/सन्तोष।

सम्+देश= संदेश/सन्देश। सम्+धान= संधान/सन्धान।

सम्+धि= संधि/सन्धि। सम्+ताप= संताप/सन्ताप।

सम्+न्यासी= संन्यासी/सन्नयासी। किम्+तु= किंतु/किन्तु।

*** पवर्ग :**

सम्+पात= संपात/सम्पात। सम्+पति= संपति/सम्पति।

सम्+बन्ध= संबन्ध/सम्बन्ध। सम्+बोधन= संबोधन/सम्बोधन।

सम्+भावित= संभावित/सम्भावित।

सम्+भव= संभव/सम्भव।

5. यरोऽनुनासिके :-

यदि कोनो वर्गक प्रथम वर्ण के बाद (+) कोनो वर्गक पञ्चम वर्ण अबैत अछि; तँ प्रथम वर्ण सेहो पञ्चम वर्ण भऽ जाइत अछि। **जेना-**

जगत्+नाथ= जगन्नाथ। उत्+नति= उन्नति।

ज्+अ+ग्+अ+[त् # न्]+आ+थ्+अ

उत्+नत= उन्नत। सत्+मित्र= सन्मित्र।

महत्+नाम= महन्नाम। उत्+माद= उन्माद।

उत्+मेष= उन्मेष। उत्+मूलन= उन्मूलन।

षट्+मुख= षण्मुख। षट्+नाम= षण्णाम।

षट्+मार्ग= षण्मार्ग। षट्+मास= षण्मास।

दिक्+नाग= दिङ्नाग। वाक्+मय= वाङ्मय।

पराक्+मुख= पराङ्मुख। सत्+मार्ग= सन्मार्ग।

उत्+नयन= उन्नयन। तत्+मात्रम्= तन्मात्रम्।

चित्+मय= चिन्मय। मृत+मय= मृण्मय।

उत्+मूलित= उन्मूलित। तत्+मय= तन्मय।

प्राक्+मुख= प्राङ्मुख। उत्+मुख= उन्मुख।

6. छे च / पदान्ता द्वा :-

यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वरक बाद 'छ' अबैत अछि; तँ 'छ' के पहिने 'च्' के आगम भऽ जाइत अछि। **जेना-**

* **ह्रस्व :** वि+छेद= विच्छेद।

व्+[इ # छ]+ए+द्+अ

अनुच्छेद= अनु+छेद । परिच्छेद= परि+छेद।

स्वच्छन्द= स्व+छन्द। लक्ष्मीच्छाया= लक्ष्मी+छाया।

शिवच्छाया= शिव+छाया। वृक्षच्छाया= वृक्ष+छाया।

तरुच्छाया= तरु+छाया। राजच्छत्रम्= राज+छत्रम्।

* **दीर्घ :**

सरस्वतीच्छाया= सरस्वती+छाया। आच्छादन= आ+छादन।

आच्छादित= आ+छादित। माच्छादयति= मा+छादयति।

शालाच्छादन= शाला+छादन। अच्छा= अ+छा।

7. झयोहोऽन्यतरस्याम् :-

यदि कोनो वर्गक, प्रथम वर्णक बाद (+) ह अबैत अछि; तँ प्रथम वर्णक तृतीय वर्ण तथा ह के बदला प्रथमे वर्णक चतुर्थ वर्ण भऽ जाइत अछि।

बनावट- (1) क्+ह = ग्ध।

वाक्+हरि = वाग्घरि।

(2) च्+ह = ज्झ। अच+हीनम् = अज्झीनम्।

(3) ट्+ह = ड्ढ़।

तट्+हीनम् = तड्ढ़ीणम्।

(4) त्+ह = द्ध।

उत्+हार = उद्धार। तत्+हित= तद्धित।

उत्+हत= उद्धत। उत्+हरण= उद्धरण।

विपत्+हेतु= विपद्धेतु। उत्+हृत= उद्धृत।

(5) प्+ह= ब्भ।

अप्+हरणम्= अब्भरणम्।

8. ष्टो ष्टुणा ष्टुः :-

(क) यदि 'ष्' के बाद त, थ अबैत अछि; तँ 'त', 'थ' के बदला 'ट', 'ठ' भऽ जाइत अछि। **जेना-**

आकृष्+तः = आकृष्टः

उत्कृष्+त = उत्कृष्ट

पृष्+थ = पृष्ठ

षष्+थम् = षष्ठम्

अष्+त = अष्ट

शिष्+त = शिष्ट

(ख) सन्धि भेने 'स्' के 'श्' तथा 'श्' के 'ष्' भऽ जाइत अछि। एकरा सकार चक्र कहल जाइत अछि। कखनो 'स' के 'ष्' सेहो भऽ जाइत अछि। **जेना-**

कस्+त = कष्ट। इश्+त = इष्ट।

दुस्+त = दुष्ट। क्लिस्+त = क्लिष्ट।

(ग) यदि तर्वक बाद टवर्ग अबैत अछि; तँ तवर्गकेँ टवर्ग भऽ जाइत अछि। **जेना-**

तत्+टिका = तट्टिका। उत्+डयण = उड्डयण।

वृहत्+टिट्टिभ = वृहट्टिट्टिभ।

(टिट्टिभ- एक पक्षी होइत अछि।)

9. श्तो श्चुना श्चुः :-

(क) यदि 'स्' के बाद 'श' अथवा चवर्ग अबैत अछि, तँ 'स्' के 'श्' भऽ जाइत अछि। **जेना-**

रामस्+शेते = रामश्शेते। हरिस्+शेते= हरिश्शेते।

रामस्+चिनोति = रामश्चिनोति।

हरिस्+चिनोति= हरिश्चिनोति।

हरिस्+ चन्द्र= हरिश्चन्द्र।

(ख) यदि तवर्गक बाद चवर्ग अबैत अछि; तँ तवर्गकेँ चवर्ग भऽ जाइत अछि। **जेना-**

(1) (त्+च = च्च)

(2) (त्+ज = ज्ज)

उत्+चारण = उच्चारण। सत्+चरित = सच्चरित्र।

शरत्+चन्द्र = शरच्चन्द्र। एतत्+चन्द्र = एतच्चन्द्र।

संकल्पात्+च = संकल्पाच्च।

उत्+छेद = उच्छेद। वित्+छिन्न = विच्छिन्न।

भवत्+चरणम्= भवच्चरणम्।

उत्+ज्वल= उज्जवल। सत्+जन = सज्जन।

विपत्+जाल= विपज्जाल।

(ग) यदि उपसर्ग जनित शब्दक बाद (+) सकारक संग त, थ अबैत अछि; तखन त, थ, के ट, ठ भऽ जाइत अछि।

जेना- अधि+स्थाता = अधिष्ठाता। प्रति+स्था= प्रतिष्ठा।

युधि+स्थिर = युधिष्ठिर।

10. तोर्लि: :-

(क) यदि 'त्' के बाद (+) 'ल' अबैत अछि; तखन 'त्' के सेहो 'ल्' भऽ जाइत अछि।

बनावट :- (त्+ल = ल्ल)

जेना- उत्+लास= उल्लास। तत्+लीन= तल्लीन।

उत्+लेख= उल्लेख। महत्+लोक= महल्लोक।

जगत्+लय= जगल्लय। उत्+लिखित= उल्लिखित।

जगत्+लीला= जगल्लीला। शरत्+लीला= शरल्लीला।

सत्+लाप= सल्लाप। उत्+लंघन= उल्लंघन।

(ख) यदि 'न्' के बाद 'ल' अबैत अछि; तखन 'न्' के अनुनासिक 'ँल्' भऽ जाइत अछि।

बनावट :- (न् + ल = ँल्ल।)

जेना- विद्वान्+लाभ = विद्वाँल्लाभ।

महान्+लाभ= महाँल्लाभ।

विद्वान्+लिखति= विद्वाँल्लिखति।

विद्वाँल्लेख= विद्वान्+लेख।

विद्वाँल्लाप = विद्वान्+लाप।

11. शश्छोऽटि :-

यदि 'त्' के बाद (+) 'श' अबैत अछि; तँ 'त्' के 'च्' आ 'श' के बदला 'छ' भऽ जाइत अछि।

बनावट :- (त् + श = च्छ)

जेना- तत्+ शिव= तच्छिव। तत्+शरणम्= तच्छरणम्।

तत्+शकटम्= तच्छकटम्। तत्+श्रुत्वा= तच्छ्रुत्वा।

सत्+शास्त्र= सच्छास्त्र। उत्+शिष्ट= उच्छिष्ट।

उत्+श्वास= उच्छ्वास। तत्+श्लोकेन= तच्छ्लोकोन।

भवत्+शरण्य= भवच्छरण्य। उत्+शृंखल= उच्छृंखल।

महत्+शकट= महच्छकट। तत्+शरीर= तच्छरीर।

12. ङमो ह्रस्वादचि ङमूण् नित्यम् :-

यदि ङ्, ण् या न् सँ पहिने ह्रस्व स्वर रहैत अछि तथा बादमे कोनो स्वर अबैत अछि; तँ ङ्, ण् तथा न् के द्वित्व (दूटा) भऽ जाइत अछि।

जेना- प्रत्यङ्+आत्मा= प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण्+ईश= सुगण्णीश।

सन्+अन्त= सन्नन्त। पातयन्+इव= पातयन्निव।

धावन्+आगच्छति= धावन्नागच्छति।

धावन्+अश्व= धावन्नश्व। हसन्+आगत= हसन्नागत।

सन्+अच्युत= सन्नच्युत। अस्मिन्+एव= अस्मिन्नेव।

तस्मिन्+एव= तस्मिन्नेव। पुषन्+अपावृणु= पुषन्नपावृणु।

13. **पदान्त न् :-**

यदि पदान्त 'न्' के बाद च, छ, या ट, ठ अथवा त, थ अबैत अछि; तखन 'न्' के अनुस्वार (ं) आ क्रमसँ (1) श् (2) ष् तथा (3) स् के आगम भऽ जाइत अछि।

जेना- च/छ लेल श् :-

नृत्यन्+चकोर= नृत्यंश्चकोर। पश्यन्+चकित= पश्यंश्चकित।

हसन्+चलति= हसंश्चलति। धावन्+चलित:= धावंश्चलित:।

ऋषिन्+च= ऋषिंश्च। कस्मिन्+चित्= कस्मिंश्चित्।

भवान्+चलति=भवांश्चलति।

गच्छन्+चिन्यति= गच्छंश्चिन्तयति।

महान्+छली= महांश्छली। धावन्+छात्र= धावंश्छात्र।

महान्+छन्द= महांश्छन्द। धावन्+छाग= धावंश्छाग।

हसन्+छात्र= हसंश्छात्र।

*** ट/ठ लेल ष् :-**

चलन+टिट्टिभ:=चलंष्टिट्टिभ:। उड्यन+टिट्टिभ=उड्यंष्टिट्टिभ।

खादन्+टिट्टिभ= खादंष्टिट्टिभ। विद्वान+टिकते= विद्वांष्टिकते।

महान्+टंकार= महांष्टंकार। गच्छन्+ठग= गच्छंष्ठग।

महान्+ठग= महांष्ठग। धीमान्+ठक्कुर= धीमांष्ठक्कुर।

महान्+ठक्कुर= महांष्ठक्कुर।

*** त/थ लेल स् :-**

पतन्+तरू= पतंस्तरू। भ्रमण्+तटे= भ्रमंस्तटे।

देवान्+तव= देवांस्तव। सर्वान्+तथा= सर्वांस्तथा।

चक्रिन्+त्रायस्व= चक्रिंस्त्रायस्व।

पतन्+थले= पतंस्थले। धावन्+थले= धावंस्थले।

गच्छन्+थले= गच्छंस्थले। क्षिपन्+थुत्कार= क्षिपंस्थुत्कार।

गच्छन्+थकित= गच्छंस्थकित।

पश्यन्+थकित= पश्यंस्थकित।

व्यंजन सन्धि समाप्त।

❑

3. विसर्ग सन्धि

शर्त :- (1) विसर्ग (:) + स्वर = विसर्ग सन्धि।

(2) विसर्ग (:) + हल् (व्यंजन) = विसर्ग सन्धि।

1. हशि च :-

यदि विसर्ग (:) सँ पहिने अ स्वर रहए तथा बाद (+) मे वर्गक तृतीय, चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह आबए तँ विसर्गक (: ⟶ उ) उ भऽ जाइत अछि आ यएह 'उ' अपना पूर्ववर्ती 'अ' सँ मिलि कऽ उत्व गुण सन्धि (अ+उ = ओ) ओ (ो) भऽ जाइत अछि तथा आगाँक वर्णसँ मिल जाइत अछि।

जेना-

यश: + दा = यशोदा

अ+उ

ो

मन: + ज = मनोज

अ + उ

ो

अध्र: + गति = अधोगति

अ + उ

ो

पय: + द = पयोद। सर: + ज= सरोज।

*** तृतीय वर्ण :-**

शोभन:+गन्ध= शोभनोगन्ध। राम:+गच्छति= रामोगच्छति।

कोगत=क: + गत:। मन:+गत = मनोगत।

मन:+देहि = मनोदेहि। पाथ:+ज = पाथोज।

अम्भ:+ज = अम्भोज। तम:+गुण = तमोगुण।

रज:+गुण = रजोगुण। सत:+गुण = सतोगुण।

*** चतुर्थ वर्ण :-**

यश:+धरा = यशोधरा।

पय:+धर = पयोधर। मन:+भाव = मनोभाव।

अध:+धार = अधोधार। तप:+भूमि = तपोभूमि।

यश:+धन = यशोधन। पय:+धि = पयोधि।

अकुत:+भय = अकुतोभय। तप:+धन = तपोधन।

*** पंचम वर्ण :-**

नम:+नारायणाय = नमोनारायणाय। तेज:+मय = तेजोमय।

मन:+नयन = मनोनयन। मन:+नीत = मनोनीत।

मन:+मल = मनोमल। शिर:+मणि = शिरोमणि।

*** य :-**

मन:+योग = मनोयोग। रोग:+योग = रोगोयोग।

संयम:+योग = संयमोयोग।

*** र :-**

मन:+रथ = मनोरथ। मन:+रम = मनोरम।

अह:+रात्र = अहोरात्र। तेज:+राशि = तेजोराशि।

शान्त:+रोष = शान्तोरोष। मन:+रञ्जनम्= मनोरञ्जनम्।

*** ल :-**

यश:+लाप: =यशोलाप: । यश:+लाभ = यशोलाभ ।

शृंगार:+लालित्य = शृंगारोलालित्य ।

राम:+लक्ष्मण = रामोलक्ष्मण । अध:+लेख: = अधोलेख: ।

अध:+लिखित = अधोलिखित ।

*** व :-**

सर:+वर = सरोवर ।

मन:+विकार = मनोविकार । वय:+वृद्ध = वयोवृद्ध ।

मन:+वाञ्छित= मनोवाञ्छित । मन:+वैद्य= मनोवैद्य ।

शीत:+वायु= शीतोवायु । तप:+वन = तपोवन ।

नम:+विश्वसृजे= नमोविश्वसृजे । छन्द:+बद्ध= छन्दोबद्ध ।

*** ह :-**

पुर:+हित:= पुरोहित: । मन:+हर= मनोहर ।

यश:+हार= यशोहार । यश:+हित= यशोहित ।

लाभ:+हानि= लाभोहानि ।

2. अतोरोरप्लुतादप्लुते :-

यदि विसर्गक आगाँ-पाछाँ 'अ' स्वर रहए, तँ विसर्गक 'उ' भऽ कऽ ओ (ो) भऽ जाइत अछि तथा आगाँबला अ के खण्डाकार भऽ जाइत अछि ।

जेना-

यश: + अभिलाषि = यशोऽभिलाषि

अ+उ ऽ

ो

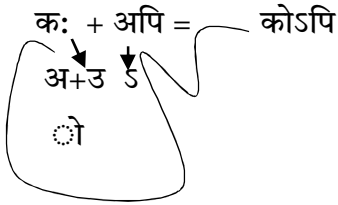

प्रथम: + अध्याय = प्रथमोऽध्याय। क: + अयम् = कोऽयम्

क:+अत्र= कोऽत्र। बालक:+अवदत्= बालकोऽवदत्।

स:+अवदत्= सोऽवदत्। स:+अहम्= सोऽहम्।

देव:+अयम्= देवोऽयम्। कुत:+अत्र= कुतोऽत्र।

पान्थ:+अवदत्= पान्थोऽवदत्। शिव:+अर्च्य= शिवोऽर्च्य।

काल:+अस्मि= कालोऽस्मि। देव:+अपि= देवोऽपि।

स:+अपि= सोऽपि। मन:+अनुकूल= मनोऽनुकूल।

वेद:+अधीत= वेदोऽधीत। मन:+अभिलाषा= मनोऽभिलाषा।

सर्वत:+अनन्तरूपम्= सर्वतोऽनन्तरूपम्।

निरत:+अभवत्= निरतोऽभवत्। विरक्त:+अभूत = विरक्तोऽभूत।

3. वा शरि :-

यदि विसर्गक (:) बाद (+) कोनो सकार (श, ष, स) अबैत अछि; तँ विसर्गक वएह सकार (हल् वर्ण) भऽ जाइत अछि।

जेना- दु:+शासन= दुश्शासन। सुप्त:+शिशु= सुप्तश्शिशु।

नि:+शब्द= निश्शब्द। उन्नत:+शील= उन्नतश्शील।

नि:+शंक= निश्शंक। दु:+शील = दुश्शील।

बाल:+षष्ठ= बालष्षष्ठ। राम:+षष्ठ= रामष्षष्ठ।

चतुर्थ:+षटकोण= चतुर्थष्षटकोण।

नि:+सन्देह= निस्सन्देह। नि:+सार= निस्सार।

नि:+सृत=निस्सृत। नि:+सहाय= निस्सहाय।

दु:+साहस= दुस्साहस। नि:+संकोच= निस्संकोच।

नि:+सम्भव= निस्सम्भव।

4. रोरि/द्रूलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽर्ण: :-

यदि विसर्गक बाद (+) र अबैत अछि; तँ विसर्गसँ पहिनुक स्वर दीर्घ भऽ जाइत अछि। जेना-

नि:+रोग= नीरोग। नि:+रव= नीरव।

नि:+रस= नीरस। दु:+राज= दूराज

भानु+रजते= भानूराजते। पुन:+रमते= पुनारमते।

विधु:+राजते= विधूराजते। प्रात:+रम्य= प्रातारम्य।

नि:+रज= नीरज। हरि:+रम्य= हरीरम्य।

5. ससजुषो रू: :-

यदि विसर्गसँ पहिने अवर्ण (अ, आ) केँ छोड़ि कोनो दोसर स्वर रहए आ बाद (+) मे वर्गक तृतीय, चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा स्वर अबैत अछि; तँ विसर्गक र् या रेफ् भऽ जाइत अछि। **जेना-**

*** तृतीय वर्ण :-** नि:+जन= निर्जन। नि:+गत= निर्गत।

निर्जन = नि: + जन

न्+इ+ $\boxed{: \# ज्}$ +अ+न्+अ

नि:+द्वन्द्व= निर्द्वन्द्व। नि:+दय= निर्दय।

नि:+गुण= निर्गुण। दु:+गुण= दुर्गुण।

नि+गम= निर्गम। दु:+गम= दुर्गम।

दु:+गति= दुर्गति। दु:+दान्त= दुर्दान्त।

नि:+बल= निर्बल। दु:+बल= दुर्बल।

दु:+गन्ध= दुर्गन्ध। नि:+गन्ध= निर्गन्ध।

नि:+जीव= निर्जीव। दु: + दिन = दुर्दिन।

*** चतुर्थ वर्ण :-** दु:+घर्ष= दुर्घष। दु:+घटना= दुर्घटना।

नि:+भर= निर्भर। नि:+झर= निर्झर।

नि:+धन= निर्धन। दु:+भावना= दुर्भावना।

कृषि:+भवति= कृषिर्भवति। दु:+भाषा= दुर्भाषा।

चतु:+भुज= चतुर्भुज।

*** पंचम वर्ण :-** नि:+मल= निर्मल। नि:+मान= निर्माण।

नि:+नय= निर्णय। नि:+मम= निर्मम।

वृति:+न= वृतिर्न। नि:+मोहि= निर्मोहि।

दु:+नीति= दुर्नीति। अन्त:+निहित= अन्तर्निहित।

जन्तो:+निहित= जन्तोर्निहित। नि:+मली= निर्मली।

नोट :- य, र, ल तथा व अर्धस्वर, स्वरक श्रेणीमे अबैत अछि।

*** य :-**

दु:+योग= दुर्योग। नि: + यात = निर्यात।

दु:+योधन= दुर्योधन। दु:+व्यवहार= दुर्व्यवहार।

दु:+विचार= दुर्विचार। आशी:+वाद= आशीर्वाद।

*** व :-**

नि:+विकार= निर्विकार।

दु:+वाद= दुर्वाद। वायु:+वाति= वार्युवाति।

दु:+वचन= दुर्वचन। नि:+वचन= निर्वचन।

*** ल :-**

दु:+लक्ष्य= दुर्लक्ष्य। दु:+लभ= दुर्लभ।

*** स्वर :-**

नि:+अर्थ= निरर्थ। नि:+अन्तर= निरन्तर।

नि:+आधार= निराधार।

नि:+आकार= निराकार। नि:+आहार= निराहार।

दु:+आचार= दुराचार। नि:+उपाय= निरूपाय।

नि:+उक्त= निरूक्त। दु:+आत्मा= दुरात्मा।

नि:+उत्तर= निरुत्तर। कवि:+अयम्= कविरयम्।

दु:+आशय= दुराशय। चतु:+आनन= चतुरानन।

नि:+उपम= निरूपम। नि:+आशय= निराशय।

नि:+आपद= निरापद। चतु:+अंग= चतुरंग।

दु:+उपयोग= दुरूपयोग। नि:+अक्षर= निरक्षर।

*** अपवाद :-** पुन:+अपि= पुनरपि। पुन:+आगत= पुनरागत।

पुन:+जन्म= पुनर्जन्म। अंत:+गत= अन्तर्गत।

अंत:+धान= अंतर्धान। प्रात:+अत्र= प्रात्ररत्र।

स्व: + ग = स्वर्ग। पुन:+उत्थान= पुनरूत्थान।

6. कुप्वो: :-

(क) यदि विसर्ग (:) के बाद (+) क, ख या प, फ अबैत अछि; तँ विसर्ग (:) मे कोनो परिर्वतन नै होइत अछि।

जेना-

*** क :-** उष:+काल= उष:काल। अन्त:+करण= अन्त:करण।

प्रात:+कल्प= प्रात:कल्प। उच्चै:+कल्प= उच्चै:कल्प।

*** ख :-** प्रात:+खल= प्रात:खल। दु:+ख= दु:ख।

*** प :-** अन्त:+पुरम्= अन्त:पुरम्। सन्त:+पुरम्= सन्त:पुरम्।

पय:+पान= पाय:पान।

*** फ :-** अन्त:+फल= अन्त:फल।

(ख) परन्तु, यदि नम: आ पुर: शब्दक बाद (+) 'कृ' धातुसँ निष्पन्न कोनो शब्द अबैत अछि, तखन विसर्ग (:) के 'स्' भऽ जाइत अछि।

जेना- नम:+कार= नमस्कार। पुर:+कार= पुरस्कार।

नम:+कृत्य= नमस्कृत्य। पुर:+कृत्य= पुरस्कृत्य।

नम:+कृत= नमस्कृत। पुर:+कृत= पुरस्कृत।

7. तिरसोऽन्यतरस्याम् :-

(क) यदि 'तिर:' शब्दक बाद (+) 'कृ' धातुसँ बनल शब्द अबैत अछि; तँ विसर्ग (:) के 'स्' भऽ जाइत अछि।

जेना-

तिर:+कार= तिरस्कार। तिर:+कृत्य= तिरस्कृत्य।

तिर:+कृत= तिरस्कृत।

(ख) यदि विसर्ग (:) के बाद (+) कर, कार, काम, काम्य, कान्त, कम, कंस, कुम्भ, कर्णी या पद, पाश तथा पात्र शब्द अबैत अछि; तँ विसर्गक 'स्' भऽ जाइत अछि।

जेना- भा:+कर= भास्कर (सूर्य)

अय:+कार= अयस्कार (लुहार, लोहार)

अय:+काम= अयस्काम (लोहाक काज)

यश:+काम्य= यशस्काम्य (यशक कामना)

अय:+कान्त= अयस्कान्त (चुम्बक, चुम्मक)

यश:+कम्= यशस्कम् (यश प्राप्ति)

श्रेय:+कर= श्रेयस्कर (श्रेष्ठ)

यश:+कल्प= यशस्कल्प (यशक कल्पना)

पय:+कंस= पयस्कंस (कंसक दूध)

पय:+कुम्भ= पयस्कुम्भ (दूधक घड़ा)

अय:+कर्णी= अयस्कर्णी (लोहाक औजार)

अध:+पद= अधस्पद (पैरक निच्चाँ)

पय:+पाश= पयस्पाश (दूध दुहैबला रस्सी, छान)

पय:+पात्र= पयस्पात्र (दूधक बरतन)

8. इदुपधस्य चाऽप्रत्ययस्य :-

यदि विसर्ग (:) सँ पहिने 'इ' या 'उ' रहैत अछि तथा बाद (+) मे 'क, ख' या 'प, फ' अबैत अछि; तँ विसर्ग (:) के 'ष्' भऽ जाइत अछि।

जेना- * क :- नि:+काम= निष्काम। नि:+कपट= निष्कपट।

नि:+कलंक= निष्कलंक। दु:+कर= दुष्कर।

आविः+कार= आविष्कार। धनुः+काण्डम्= धनुष्काण्डम्।

वहिः+कार= वहिष्कार। आविः+कृत= आविष्कृत।

वहिः+कृत= वहिष्कृत। निः+कासित= निष्कासित।

दुः+काल= दुष्काल। परिः+कार= परिष्कार।

निः+क्रमण= निष्क्रमण। निः+कारण= निष्कारण।

चतुः+कोणम्= चतुष्कोणम्।

*** ख :-** धनुः+खण्डम्= धनुष्खण्डम्। दुः+खण्डित= दुष्खण्डित।

शम्भूः+खण्डित= शम्भूष्खण्डित।

*** प :-** निः+पापम्= निष्पापम्। दुः+प्रचार= दुष्प्रचार।

दुः+प्रवृति= दुष्प्रवृति। निः+पति= निष्पति।

दुः+प्रवेश= दुष्प्रवेश। दुः+प्रहार= दुष्प्रहार।

दुः+प्रकृति= दुप्रकृति। दुः+प्रकोप= दुष्प्रकोप।

धनुः+पाणि= धनुष्पाणि। निः+पक्ष= निष्पक्ष।

*** फ :-** दुः+फल= दुष्फल। निः+फल= निष्फल।

9. विसर्जनियस्य सः :-

यदि विसर्गक बाद (+) च, छ या ट, ठ अथवा त, थ अबैत अछि; तखन विसर्गकेँ क्रमसँ (1) श् (2) ष् तथा (3) स् भऽ जाइत अछि। जेना-

*** च :-** निः+चय= निश्चय। निः+चित्= निश्चित।

क:+चित्= कश्चित्। क:+चन= कश्चन।

पूर्ण+चन्द्र:= पूर्णश्चन्द्र:। हरि:+चन्द्र = हरिश्चन्द्र।

पुन:+च= पुनश्च। मृगा:+चरन्ति= मृगाश्चरन्ति।

नम:+चण्डिकाये= नमश्चण्डिकाये।

व्याकुल:+चलति= व्याकुलश्चलति।

उत्सवा:+च= उत्सवाश्च।

*** छ :-** प्रिय:+छात्र= प्रियश्छात्र। सुशील:+छात्र= सुशीलश्छात्र।

दुष्ट:+छाग= दुष्टश्छाग। पुष्ट:+छाग= पुष्टछाग।

कृष्ण:+छात्र= कृष्णश्छात्र।

*** ट :-** धनु:+टंकार= धनुष्टंकार। वाणै:+टंकार= वाणैष्टंकार।

धनु:+टंका= धनुष्टंका।

*** ठ :-** चतुर:+ठग= चतुरष्ठग। चतुर:+ठक्कुर= चतुरष्ठक्कुर।

लुप्त:+ठग= लुप्तष्ठग।

*** त :-** शिव:+तथा= शिवस्तथा। नि:+तार= निस्तार।

निम्ब:+तरू= निम्बस्तरू। नद्या:+तीरम्= नद्यास्तीरम्।

देव:+त्रायते= देवस्त्रायते। नर:+तरति= नरस्तरति।

इत:+तत:= इतस्तत:। वैद्य:+तु= वैद्यस्तु।

दुः+तर= दुस्तर। मृगः+ते= मृगस्ते। नमः+ते= नमस्ते।

गंगायाः+तीरे = गंगायास्तीरे।

*** थ :-**

वकाः+थकित= वकास्थकित। क्षिपः+थुत्कार= क्षिपस्थुत्कार।

लम्बः+थन= लम्बस्थन। स्वर्णः+थम्भ= स्वर्णस्थम्भ।

।। सन्धि प्रकरण समाप्त ।।

❑

सन्धि कोष

पुष्प+अंजलि= पुष्पांजलि। दीप+अवली= दीपावली।

दिक्+पाल= दिग्पाल। धन+अर्जन= धनार्जन।

पक्व+आशय= पक्वाशय।

तथा+अस्तु= तथाऽस्तु। चमू+ऊर्जा= चमूर्जा।

जल+आशय= जलाशय। गन्ध+उत्कट= गन्धोत्कट।

लोक+ईश= लोकेश। देव+एव= देवैव। तव+एतत्= तवैतत्।

तत्+छाया= तच्छाया। शंकर+छवि= शंकरच्छवि।

नि:+अञ्जन= निरञ्जन। उत्+मत= उन्मत।

शाम+ति= शान्ति। सम्+आचार= समाचार।

सम्+आदर= समादर। सम्+उदाय= समुदाय।

ओष्+थ= ओष्ठ। अधर+ओष्ठ= अधरोष्ठ। (अपवाद)

नि:+थुर= निष्ठुर। फल+अफल= फलाफल।

उत+वेग= उद्वेग। कुप+उदक= कुपोदक।

जीवन+अनुकूल= जीवनानुकूल। घट+उत्कच= घटोत्कच।

जानकी+ईश= जानकीश। जगत्+नियन्ता= जगद्नियन्ता।

जीवन+उपयोगी= जीवनोपयोगी।

तद्+उपरान्त= तदुपरान्त। दृष्ट+अन्त= दृष्टान्त।

दु:+दिन= दुर्दिन। देश+अनुराग= देशानुराग।

देह+अन्त= देहान्त। धन+अन्ध= धनान्ध।

धनु:+धर= धनुर्धर। दृष्+ति= दृष्टि।

दाव+अनल= दावानल। दिक्+अन्त= दिगन्त।

दु:+अन्त= दुरन्त। दु:ख+अन्त= दु:खान्त।

नि:+ईक्षण= निरीक्षण। नार+अयन= नारायण।

नग+अधिराज= नगाधिराज। नि:+द्वन्द्व= निर्द्वन्द्व।

नि:+तेज= निस्तेज। नि:+क्रिय= निष्क्रिय।

नि:+आशा= निराशा। नि:+वासित= निर्वासित।

पद+आक्रान्त= पदाक्रान्त। परम+अनु= परमाणु।

प्र+आंगन= प्रांगन। दु:+बासा = दुर्बासा।

प्रलयम्+कर= प्रयलंकर। प्राण+ईश्वर= प्राणेश्वर।

वहि:+मुख= वहिर्मुख। ब्रह्म+आनन्द= ब्रह्मानन्द।

भिद्+न= भिन्न। पुन:+उक्ति= पुनरूक्ति।

पुन:+उत्थान= पुनरूत्थान।

प्रति+आचरण= प्रत्याचरण। प्रति+आख्यान= प्रत्याख्यान।

प्रजा+अर्थ= प्रजार्थ। मन्त्र+उत्+चारण= मन्त्रोच्चारण।

महा+अमात्य= महामात्य। महत्+त्व= महत्त्व।

भूष्+अन= भूषण। मन:+ताप= मनस्ताप।

मृत्युम्+जय= मृत्युञ्जय। मन:+विज्ञान= मनोविज्ञान।

मन:+वैज्ञानिक= मनोवैज्ञानिक। राज+आज्ञा= राजाज्ञा।

रूद्र+अवतार= रूद्रावतार। लोक+उत्तर= लोकोत्तर।

लोक+उपकार= लोकोपकार। वात+आवरण= वातावरण।

वारी+ईश= वारीश। वाक्+दान= वाग्दान।

रस+अतल= रसातल। रस+अस्वादन= रसास्वादन।

रस+आयन= रसायन। विद्या+उपदेश= विद्योपदेश।

वि+नि+आस= विन्यास। विश्व+ईश= विश्वेश।

विशेष+उन्मुख= विशेषोन्मुख। वि+सम= विषम।

वि+स्मरण= विस्मरण। वि+अभिचार= व्यभिचार।

वि+आपक= व्यापक। शत+अब्दी= शताब्दी।

श्वास+उत्+श्वास= श्वासोच्छ्वास। शेष+अंक= शेषांक।

सम्+तुष्ट= सन्तुष्ट। सम्+कट= संकट।

सम्+आधान= समाधान। सत्+कार= सत्कार।

सम्+आलोचक= समालोचक।

सम्+तृप्त= संतृप्त। सत्+चित्+आनन्द= सच्चिदानन्द।

सम्+ऋृद्धि= समृद्धि। सम्+पूर्ण= सम्पूर्ण।

सम्+पर्क= सम्पर्क। सम्+कल्प= संकल्प।

सम्+कीर्ण= संकीर्ण। सम्+ग्राम= संग्राम।

सर्व+उच्च= सर्वोच्च। सम्+मुख= सम्मुख।

सम्+मान= सम्मान। सम्+ईक्षा= समीक्षा।

सम्+उचित= समुचित। सम्+गीत= संगीत।

सम्+गठन= संगठन।

सार+अंश= सारांश। सिद्ध+अन्त= सिद्धान्त।

सुख+उपभोग= सुखोपभोग। स्वर+अनुकूल= स्वरानुकूल।

स्वर्ग+आरोहण= स्वार्गारोहन। स्व+इच्छा= स्वेच्छा।

स्थान+अन्तर= स्थानान्तर। स्व+अधीन= स्वाधीन।

पर+अधीन= पराधीन। हिम+आच्छादित= हिमाच्छादित।

हरि+इच्छा= हरीच्छा। स+अष्ट+अंग= साष्टांग।

तुष्+त= तुष्ट। लाभ+अर्थ= लाभार्थ। प्रभु+ईश= प्रभ्वीश।

उत्+छल= उच्छल। अभि+सेक= अभिषेक।

अध:+पतन= अद्य:पतन। अक्ष+अंश= अक्षांश।

अच्युत+आनन्द= अच्युतानन्द। अभि+अन्तर= अभ्यन्तर।

अन्+अधिकार= अनधिकार। इति+अलम्= इत्यलम्।

उत्तम+उत्तम= उत्तमोत्तम। उत्+आहरण= उदाहरण।

एतत्+अर्थ= एतदर्थ। कट+अक्ष= कटाक्ष।

कारा+आगार= कारागार। काल+अन्तर= कालान्तर।

किम्+नर= किन्नर।

कुठार+आधात= कुठाराघात। गो+अक्ष= गवाक्ष।

गै+इका= गायिका। धुन+अक्षर= घुनाक्षर।

घट+आकाश= घटाकाश। गमन+आगमन= गमनागमन।

छेक+अनुप्रास= छेकानुप्रास। तथा+आगत= तथागत।

दीर्घ+आयु= दीर्घायु। देश+अटन= देशाटन।

नदी+ऊर्मी= नद्युर्मि। नि:+जल= निर्जल।

परि+ईक्षक= परीक्षक। प्रति+उत= प्रत्युत।

फल+आहार= फलाहार। भव+ईश= भवेश।

मठ+अधीश= मठाधीश। मधु+आसव= मध्वासव।

मध्य+अन्तर= मध्यान्तर। महत्+तम= महत्तम।

मन:+वेग= मनोवेग। मन:+वृति= मनोवृति।

मन:+अनुसार= मनोऽनुसार। यजु:+वेद= यजुर्वेद।

यथा+उक्त= यथोक्त। वि+आल= व्याल।

हास्य+आस्पद= हास्यास्पद। स्त्री+उपयोगी= स्त्र्युपयोगी।

स्व+अर्थ= स्वार्थ। स्वयम्+एव= स्वयमेव।

सत्यम्+एव= सत्यमेव। जय+ते= जयते।

अभिस्+एक = अभिषेक। सु+अर्ग = स्वर्ग।

।। सन्धि कोषक संग सन्धि प्रकरण सम्पूर्ण भेल।।

❑

मिथिलाक्षर सिखू :-

স্বর বর্ণ (स्वर वर्ण)

অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ ৠ ঌ (दीर्घ) ৡ
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ

এ ঐ ও ঔ অং অঃ
ए ऐ ओ औ अं अः

ব্যঞ্জন বর্ণ (व्यञ्जन वर्ण)

ক ক খ খ গ গ ঘ ঘ ঙ ঙ

চ চ ছ ছ জ জ ঝ ঝ ঞ ঞ

ট ট ঠ ঠ ড ড ঢ ঢ ণ ণ

ত ত থ থ দ দ ধ ধ ন ন

প প ফ ফ ব ব ভ ভ ম ম

য য ব ব র র ল ল ব ব শ শ ষ ষ স স হ হ
ক্ষ ক্ষ ত্র ত্র জ্ঞ জ্ঞ

রাবহ খড়ী রৰ্ত্তনী (बारह खड़ी वर्त्तनी)

ক- ক কা কি কী ক্ষ কূ কে কৈ কো কৌ কং কঃ
খ- খ খা খি খী খ্ খূ খে খৈ খো খৌ খং খঃ
গ- গ গা গি গী গ্ব গূ গে গৈ গো গৌ গং গঃ
ঘ- ঘ ঘা ঘি ঘী ঘ্ ঘূ ঘে ঘৈ ঘো ঘৌ ঘং ঘঃ
চ- চ চা চি চী চ্ চূ চে চৈ চো চৌ চং চঃ
ছ- ছ ছা ছি ছী ছ ছূ ছে ছৈ ছো ছৌ ছং ছঃ
জ- জ জা জি জী জ্ জূ জে জৈ জো জৌ জং জঃ
ঝ- ঝ ঝা ঝি ঝী ঝ্ ঝূ ঝে ঝৈ ঝো ঝৌ ঝং ঝঃ
ট- ট টা টি টী ট্ টূ টে টৈ টো টৌ টং টঃ
ঠ- ঠ ঠা ঠি ঠী ঠ্ ঠূ ঠে ঠৈ ঠো ঠৌ ঠং ঠঃ
ড- ড ডা ডি ডী ড্ ডূ ডে ডৈ ডো ডৌ ডং ডঃ
ণ- ণ ণা ণি ণী ণ্ব ণূ ণে ণৈ ণো ণৌ ণং ণঃ
ত- ত তা তি তী ত্ত তূ তে তৈ তো তৌ তং তঃ
থ- থ থা থি থী থ্ থূ থে থৈ থো থৌ থং থঃ
দ- দ দা দি দী দ্ দূ দে দৈ দো দৌ দং দঃ
ধ- ধ ধা ধি ধী ধ্ ধূ ধে ধৈ ধো ধৌ ধং ধঃ
ন- ন না নি নী ন্ব নূ নে নৈ নো নৌ নং নঃ
প- প পা পি পী প্ব পূ পে পৈ পো পৌ পং পঃ
ফ- ফ ফা ফি ফী ফ্ ফূ ফে ফৈ ফো ফৌ ফং ফঃ
ব- ৰ ৰা ৰি ৰী ৰ্ ৰূ ৰে ৰৈ ৰো ৰৌ ৰং ৰঃ

ভ- ভ ভা ভি ভী ভু ভূ ভে ভৈ ভো ভৌ ভং ভ:
ম- ম মা মি মী মু মূ মে মৈ মো মৌ মং ম:
য- য যা যি যী য় যূ যে যৈ যো যৌ যং য:
র- ব বা বি বী ব ব রে রৈ রো রৌ বং ব:
ল- ন না নি নী ন্ব নূ নে নৈ নো নৌ নং ন:
ব- র রা রি রী র্ রূ রে রৈ রো রৌ রং র:
শ- শ শা শি শী শ্ব শূ শে শৈ শো শৌ শং শ:
ষ- ষ ষা ষি ষী ষ্ব ষূ ষে ষৈ ষো ষৌ ষং ষ:
স- স সা সি সী স্ব সূ সে সৈ সো সৌ সং স:
হ- হ হা হি হী হ্ হূ হে হৈ হো হৌ হং হ:
ক্ষ- ক্ষ ক্ষা ক্ষি ক্ষী ক্ষ্ ক্ষূ ক্ষে ক্ষৈ ক্ষো ক্ষৌ ক্ষং ক্ষ:
ত্র- ত্র ত্রা ত্রি ত্রী ত্র্ ত্রূ ত্রে ত্রৈ ত্রো ত্রৌ ত্রং ত্র:
জ্ঞ- জ্ঞ জ্ঞা জ্ঞি জ্ঞী জ্ঞ্ জ্ঞূ জ্ঞে জ্ঞৈ জ্ঞো জ্ঞৌ জ্ঞং জ্ঞ

मिथिलाक्षरमे लिखू :-

आतंकवाद संरक्षक देश =	ঋাতংকরাদ সংবক্ষক দেশে
भारतक राजधानी दिल्ली =	ভাবতক বাজধানী দিল্লী
फूलक राजा गुलाव =	ফূলক বাজা গ্বলাব
क्रिकेटक भगवान सचिन =	ক্রিকেটক ভগরান সচিন
देशहित सर्वोपरि =	দেশেহিত সর্বোপবি
गुलाव सुन्दर अछि =	গ্বলাব স্বন্দব ঋছি
बिहारक राजधानी पटना =	বিহাবক বাজধানী পটনা
अनुशासन प्रिय =	ঋনুশাসন প্রিয
कर्मक प्रधानता =	কর্মক প্রধানতা
सत्यमेव जयते =	সত্যের জযতে